

अष्टांगहृदय – सूत्रस्थान्

1) आयुष्कामीय अध्याय

ब्रह्मा स्मृत्वा = ब्रह्मा द्वारा आयुर्वेद का स्मरण

अष्टांगहृदय का स्वरूप – न अतिसंक्षेप विस्तार

अष्टांग आयुर्वेद – काय शल्य

बाल दृष्टि

ग्रह जरा (रसायन)

उर्ध्वाग वषान् (वाजीकरण)

अग्नि प्रकार – 4

वात – विषमाग्नि

पित्त – तीक्ष्णाग्नि

कफ – मंदाग्नि

समदोष – समाग्नि

कोष्ठ प्रकार – 3

कुर – वात

मृदू – पित्त

मध्यम – कफ

प्रकृति –

ऐकदोषज – 1) वात – हीन

2) पित्त – मध्यम

3) कफ – उत्तम

द्विदोषज – निंद्य

समधातु – श्रेष्ठ



वातगुण – तत्र रूक्षो लगु शीतः खरः सूक्ष्म चल अनिलः ।

चरक – दारूण व विशदः

पित्तगुण – सस्नेहं उष्णं तीक्ष्णं च लघु विस्त्रं सरं द्रवं ।

सुश्रुत – नील पीत

कफगुण – स्निधः शीतः गुरुः मंद इलक्षणः मृत्स्न स्थिरः कफः ।

दो दोषो का क्षय/कोप – संसर्ग

तीन दोषो का क्षय/कोप – सान्निपात

षड्गुण	स्वादु	अम्ल	लवण	तिक्त	उष्ण(कटू)	कषाय
यथापूर्व बलावहा (बलवान्)						

द्रव्य प्रकार – 3 (चरक – प्रभाव भेद से द्रव्य प्रकार)

शमन

कोपन

स्वस्थहित

वीर्य प्रकार – 2

1) उष्ण

2) शीत

विपाक – 3

1) मधुर

2) अम्ल

3) लवण

} वाग्भट व चरकानुसार

सुश्रुतानुसार विपाक – 2

गुरु

लघु

रोग /व्याधी व्याख्या –

चरक – विकारो धातुवैषम्यं

सुश्रुत – तद् दुःख सम्योगा व्याधय उच्यन्ते

वाग्भट – रोगस्तु दोषवैषम्यं ।

रोग प्रकार – 2

निज

आगंतु

रोग अधिष्ठान – 2

काय

मन

मन के दोष – 2

1) रज

2) तम

रोगी परीक्षा –

निविधि परीक्षा – दर्शन स्पर्शन प्रश्न – वाग्भट

षडविधि परीक्षा – पंचज्ञानेंद्रिय + प्रश्न – सुश्रुत

अष्टविधि परीक्षा – नाडी मल मूत्र ... – योगरत्नाकर

दशविधि परीक्षा – प्रकृति सार संहन .. – चरक

देश – भूमि व देह

देशप्रकार – 1) जांगल – वातभूयिष्ठ

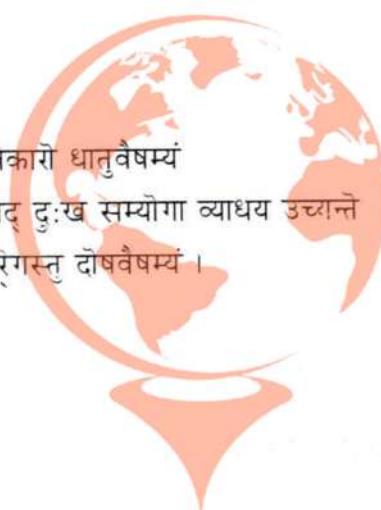
2) आनूप – कफभूयिष्ठ

3) साधारण – सममल

भेषजयोगकृत काल प्रकार – 2

क्षणादी – मुहुर्मुहु आदी

व्याधी अवस्था – नव जीर्ण साम निरामादी



TIERRA

औषध प्रकार - 2

शोधन

शमन

मानस विकार चिकित्सा सूत्र – धी धैर्य आत्मादीविज्ञानं मनोदौष परं ।

चतुष्पाद –

अ) वैद्य - दक्ष

तीर्थात्तिशास्त्रार्थो

दृष्टकर्मा

शुचि

ब) औषध - बहुकल्पं

बहुगुणं

संपन्न

योग्य

क) परिचारक - अनुरक्त

शुचि

दक्ष

बुधिमान

ड) रूण - आढय

भिषग्वश्य

ज्ञापक

सत्त्ववान्

TIERRA

व्याधी प्रकार -

साध्य - अ) सुखसाध्य

ब) कष्टसाध्य

असाध्य - अ) याप्य

ब) अनुपऋम

सुखसाध्य - सर्व औषधक्षम देह

यूनः (युवावस्था)

पुंसो (पुरुष रूण)

जितात्मानः

अमर्मग

अल्पहेतु

अल्प अग्ररूप

अल्प रूप

अनुपद्रव

अतुल्यदूष्यदेशाकृतु प्रकृति
 पादसंपद्
 अनुग्रह
 ऐकदोषज
 ऐकमार्गज
 नव
 ब) कष्टसाध्य - शस्त्रादीसाधन
 क) याप्य -
 शोषत्वादायुषो पथ्याभ्यासाद् विपर्यये
 ड) प्रत्याख्येय -



अध्याय -2 दिनचर्या अध्याय

दंतधावनार्थ योग्य वृक्ष – अर्क, न्यग्रोध, खदिर, करंज, ककुभ

दंतधावनार्थ योग्य रस – कषाय कटू तिक

सुश्रुतानुसार दंतधावनार्थ योग्य रस व उनमें श्रेष्ठ द्रव्य -4

1)मधुर – मधुक 2) कटू – करंज 3) तिक – निंब 4) कषाय – खदिर

दंतधावनार्थ अयोग्य –

अजीर्ण

श्वास

तृष्णा

ज्वर

अर्दित

वमथु

कास

आस्यपाक

हुदय नेत्र शिर कर्णामय

नित्य अंजनार्थ –

चरक – सौवीरांजन

सुश्रुत – स्त्रोतोंजन

वाग्भट – सौवीरांजन

चक्षुः तेजोमयं तस्य विशेषात् श्लेषणो भयम् ।

वाग्भटानुसार स्त्रावणार्थ – रसांजन = सप्तरात्रै योजयेत्

अंजन पश्चात उपक्रम – नावन गंडूष धूम ताम्बुल

ताम्बुल सेवन अयोग्य –

उरक्षत

रुक्षोत्कृपित चक्षु

विष

रक्तपित्त

मूच्छा शौष मद

अभ्यंग -

अभ्यंग आचरेत् नित्यं स जरा श्रम वातहा

अभ्यंग विशेषतः किस स्थान में करना चाहिए -

शिर

श्रवण

पाद

अभ्यंग निषेध -

कफग्रस्त

कृतसंशुद्धी

अजीर्ण

व्यायाम -

व्यायाम - लाघव कर्मसामर्थ्य दीपोग्नि मैदाक्षय विभक्तघन गात्रत्व

व्यायाम निषेध -

वातपित्तामयी

बाल

वृद्ध

अजीर्ण

बलवान् व स्निग्धभौजी व्यक्ती }

शीतकाल वसन्त ऋतु }

इतर ऋतु में

अर्धशक्ती व्यायाम

- अर्धशक्ती से कम व्यायाम करना चाहिए

व्यायाम पश्चात् उपक्रम - मर्दन

अतिव्यायागजन्य दोष -

ज्वर

चर्दि

तृष्णा

प्रतमक

रक्तपित्त

कास

श्रम

क्षय

क्लम

उद्वर्तन -

कफहरं

मैदासः प्रविलापनम्

स्थिरिकरणं अंगानां

त्वक्प्रसादकर

सुश्रुतानुसार - वातहर कफमेदोविलापन

स्नान -

दीपन

उर्जाबिलप्रद

वृष्य

कण्ठू मल श्रम स्वेद तंद्रा तट दाह पाम्पजित्

आयुष्यकर

अथःकायस्नान – उष्णाम्बुसे करना चाहिए = बलावह

उत्तमांग पर उष्णाम्बु से स्नान करने से = कैश चक्षु बलहृत

स्नान निषेध –

नेत्ररोग

आध्मान अर्दित

भौजनोत्तर

आस्यरोग

अजीर्ण

कर्णरोग

अतिसार

पीनस

सदवृत्त वर्णन

वाग्भटोक – दशविध पापकर्म

- | | |
|-------------------------|--|
| 1) हिंसा | 6) अनृत |
| 2) अस्तेय | 7) सभिन्नालाप (असंबध्द आलाप) |
| 3) अन्यथाकाम (व्यभिचार) | 8) व्यापाद (दुसरे व्यक्ता का अहित चिंतन) |
| 4) पैशून्य | 9) अभिध्या |
| 5) परूष (कठोर वचन) | 10) दृग विपर्याय |



अध्याय – 3 ऋतुचर्या अध्याय .

अ) आदान / उत्तरायण

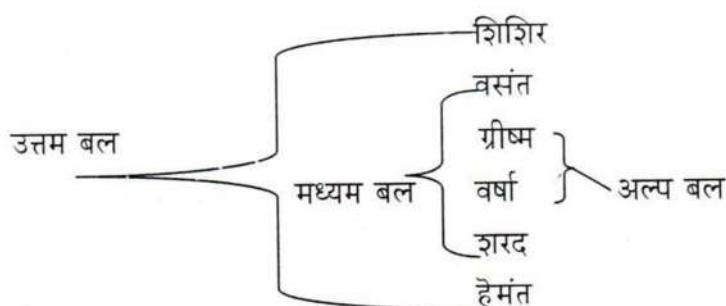
आदित्य द्वारा सौम्य गुण का क्षण

उत्तरोत्तर तिक्त कषाय कट्टू रस बलवान

TIERRA

सौम्य गुण का चंद्रमा द्वारा वर्धन

उत्तरोत्तर अम्ल लवण मधुर रस बलवान



ऋतुचर्या – स्वस्थवृत्त नोट्स

अध्याय – 4 रोग अनुत्पादनीय अध्याय – स्वस्थवृत्त नोट्स

अध्याय – 5 द्रवद्रव्यविज्ञानीय अध्याय

आकाशीय जल – अव्यक्त रस

आकाशीय जल परीक्षा –

रजत पात्र में आकाशीय जल सह शाली अन्न रखने पर =

अविवर्ण व अक्लिन्न रहने पर – आकाशीय जल

अन्यथा – इतर जल

सामुद्र जल – अश्विन व्यतिरिक्त इतर मास में सेवन अयोग्य

नदी जल गुणधर्म –

पश्चिमाभिमुखी – अथकर

पूर्वाभिमुखी – अपथकर

हिमालय व मलय पर्वत से वाहिनी – कृमी श्लीपद हुड़ोग कंठरोग उत्पत्ति

प्राच्य अवन्त्य – अर्झ

माहेन्द्र प्रभवज – उदर श्लीपद उत्पत्ति

सह्य विंध्य – कुष पांडु शिरोरोग

पारियात्रज – त्रिदोषधन

सागराम्भ (सामुद्रजल) – त्रिदोषकर

जलपान निषेध / अल्प जलपान योग्य –

अर्झ	ग्रहणी	अतिसार
------	--------	--------

गुल्म	उदर	शोथ
-------	-----	-----

अल्पानि	पांडू
---------	-------

ऋते शरद निदाघाभ्यां पिवैत् स्वस्थोऽपि अल्पशः ।

स्वस्थी व्यक्ती शरद व निदाघ (ग्रीष्म) छोड़कर इतर ऋतु में अल्प जलपान करे ।

समस्थूलकृशा भक्तमध्यान्तप्रथमाम्बुपा ।

भक्त प्रथम अम्बुपान – कृशता

भक्त मध्ये अम्बुपान – समत्व

भक्त अन्ते अम्बुपान – स्थूलत्व

शीत जलपान योग्य –

मदात्यय	श्रम	चर्दि	औष्ठ्य	रलानी
---------	------	-------	--------	-------

रक्तपित्त	भ्रम	तृष्णा		दाह
-----------	------	--------	--	-----

विषविकार	मूर्च्छा			
----------	----------	--	--	--

उष्णोदक गुणधर्म –

दीपन पाचन कंद्य लघु उष्ण बस्तीशोधन

उष्णोदक सेवन योग्य –

हिकाका	आध्मान वातकफाधिक्य
--------	--------------------

श्वास	पार्श्वरूजा	सद्यशुध्दी
-------	-------------	------------

कास	आम	नवज्वर
पीनस		
क्वथित शीतजल	- पित्तयुक्त रोग में हितकर	
पर्युषित जल	- त्रिदोषकर	
नारिकेलोदक	-	
लघु	स्वादु	वातपित्तधन
शीत	वृष्णि	दीपन
स्निग्ध		बस्तिशोधन
दिव्य जल	- श्रेष्ठ	नादेय जल - कनिष्ठ

क्षीरवर्ग -

गव्यक्षीर -

जीवनीय रसायन क्षतर्क्षीणहित मेध्य स्तन्यकर सर
श्रम भ्रम मद अलक्ष्मीनाशन
जीर्णज्वर मूत्रकृच्छ्र रक्तपित्तनाशन श्वास कासधन

माहिषीक्षीर -

अत्यग्नि अनिद्रानाशन

अजाक्षीर -

अजाद्वारा अल्पाम्बुपान, व्यायाम, कटुतिकाशन = लघु
योग्य व्याधी - शोष ज्वर श्वास रक्तपित्त अतिसार

उष्ट्रक्षीर -

इष्ट रूक्ष उष्ण लवण लघु दीपन

वातकफधन

आनाह कृमी शोफ उदर अर्शांचन

डन्नीदुर्गाथ -

वातपित्तधन

अस्त्रदोषनाशन

अभिधातोत्पन्न अक्षिरोगनाशन

तर्पण आश्रोतन नस्यार्थ

आविक दुर्गाथ -

हुदय

हिका श्वास पित्त कफ कर

वातव्याधीहर (उष्ण होनेसे)

हस्तिनी क्षीर - स्थैर्यकृत

ऐकशफ प्राणी -

उष्ण लघु जडताकर

अम्ल लवण

शाखावातहर

आम दुग्ध – अभिष्यंदी गुरु

श्रुत दुग्ध – लघु अनभिष्यंदी

अतिश्रुत दुग्ध – गुरु

धारोष्ण दुग्ध – अमृतोपम

दधि –

गुण – गुरु उष्ण

रस – अम्ल

विपाक – अम्ल

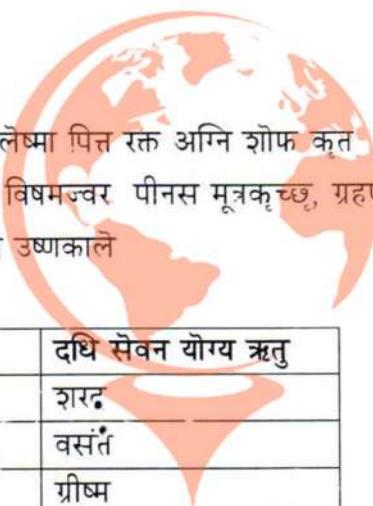
वीर्य – उष्ण

दोषधनता – वातधन

गुणधर्म – मेद शुक्र बल श्लेष्मा पित्त रक्त अग्नि शोफ कृत

रोगधनता – अरुची शीतक विषमज्वर पीनस मूत्रकृच्छ्र, ग्रहणी

दधि सेवन निषेध – गत्री व उष्णकाले



दधि सेवन योग्य ऋतु	दधि सेवन योग्य ऋतु
वर्षा	शरद
हेमंत	वसंत
शिशिर	ग्रीष्म

दधि सेवनार्थ व्यंजन – मुद्रसूप क्षोद्र घृत सितोपला आमलकी

तक्र –

TIERRA

गुण – लघु

रस – कषाय अम्ल

गुणधर्म – दीपन कफवातधन

रोगधनता –

शोफ

ग्रहणी

घृतव्यापत्

गरविष

उदर

मूत्रग्रह

यांडु

अर्श

अरुची

प्लीहरोग

गुल्म

मस्तु – सर स्त्रोतशोधी विष्टम्भजित् लघु

नवनीत – संग्राही वातपित्तासूक क्षय अर्शाअर्दितकासजित्

घृत – स्नेहानाम् उत्तमं शीतं वयसः स्थापनं परम् ।

सहस्त्रवीर्यं विधिभिर्घृतं कर्मसहस्त्रकृत् ॥

पुराण घृत – उन्माद अपस्मार नाशन

व्रणशोधन रोपण

किलाट पियूष कूर्चिका मोरणादय -

बल्य गुरु शुक्रल कफकर निदाकर

क्षीर व घृत मे श्रेष्ठ - गोदुध व गोघृत

क्षीर व घृत मे कनिष्ठ - आविक धीर व घृत

इक्षु प्रकार - 4 पौंडक वांशिक भास्मर पौत्रिक

श्रेष्ठ प्रकार - पौण्डक

वांशिक उससे कनिष्ठ

फाणित - गुरु अभिष्यंदी चयकृत मूत्रशोधन

गुड - प्रभूतकमीमज्जासूक मेदो मांस कफ कर

नविन गुड - इलेष्माग्निसादकृत्

पूराण गुड - हुदय पथ्यकर

शर्करा -

1) मस्त्याण्डिका

2) खण्डशर्करा

3) सिता

इक्षविकार मे श्रेष्ठ = शर्करा

कनिष्ठ = फाणित

मधु - चक्षुष्य छेदी तट इलेष्मा विषहिध्मा अस्त्रपितनुत् ।

मेहकुष्ठ कृमी छर्दि श्वास कास अतिसारनुत् ॥

व्रणशोधन संधान रोपण वातल मधु ।

रुक्षं कषाय मधुरं तत् तुल्यम् मधुशर्करा ॥

मधु वीर्य - शीत

मधु - उष्ण द्रव्य

उष्ण विकार

उष्ण ऋतु

TIERRA

ऋग्मसे बलवान् व् गुणवान्

} सेवन निषेध

अपवाद - प्रच्छर्दन (वमन) - अलब्धपाकाद् आशु ऐव निवर्तते ।

निरूह वमन व निरूह मे पाक पूर्व ही मधु का बाहर निर्गमन होता है

तैल - गुण - सूक्ष्म तीक्ष्ण उष्ण व्यवायी

त्वकदोषकृत अचक्षुष्य कफकृत न

विशेष गुणधर्म - कृशानाम् बृहणायालम् स्थूलानाम् कर्शनाय ।

ऐरंड तैल - वर्धम गुल्म विषमज्ज्वरनाशक

रुक्षशोफौ च कटिगुह्यकोष्ठपृष्ठाश्रयो जयेत् ।

सर्षप तैल - कोठ कुष्ठ अर्श व्रण जन्तुजित् ।

मद्य -

रस - मधुर तिक्क कटू अम्ल कषाय

विपाक – अम्ल

विशेष गुणधर्म – नष्टनिद्रा अतिनिद्रेभ्यो हितं

कृशस्थूल हितं

नविन मदय	पूराण मदय	मार्दिक मदय
गुरु	लघु	लैखन
त्रिदोषकर	त्रिदोषध्न	हुदय

शुक्र कल्पना = अम्ल कल्पना

धान्याम्ल / आरनाल/ कांजी –

उष्ण तीक्ष्ण, वातकफहर
पित्तकत् स्पर्शशीतलम्
श्रमक्लमहर रूच्य हुदय बस्तीशूलनुत्

मूत्र –

प्रधान रस = कटू

अनुरस – लवण

रोगधनता – कृमी

शोफः

आनाह

उदर

शूल

पांडु

गुलम

विष

श्वित्र कुष्ठ

अर्श

मूत्रवर्ग – 8

गो

अजा

आवि

माहिष

गज

अश्व

उष्ट्र

खर

अध्याय – 6 अन्नस्वरूप विज्ञानीय

शूक्रधान्य वर्ग –

शालीवर्ग –

TIERRA

रक्तशाली – श्रेष्ठ त्रिदोषध्न पथ्यकर बध्दाल्पवर्चस

यवक – कनिष्ठ त्रिदोषकर

व्रीही वर्ग –

घटिक – श्रेष्ठ त्रिदोषध्न

प्रियंगु – भग्नसंधानकृत

यव – रुक्ष शीत गुरु स्वादु सर

विड वातकृत वृष्य स्थैर्यकर

पीनस श्वास कास उरुस्तंभनाशन

गोधूम – संधानकृत स्थैर्यकृत जीवन नान्दीमुखी गोधूम – पथ्यकर

शिर्मिधान्य –

मुद्र	कषाय स्वादु कटूपाकी	शीत लघु मैदकफध्न
मसूर		
आढकी		

संग्राही विबन्धकृत रक्तपित्तध्न

लैप व सैक में उपयोगी

मुदग	राजमाष	कलाय
अल्पचल	अनिलकर	अतिवातल

कुलत्थ - अम्लविपाकी

कफवातधन रक्पित्तकर

निष्पाव - विदाही दृक शुक्रधन

माष - मल व शुक्रवर्धक

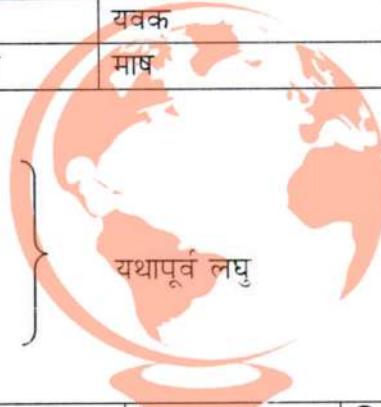
तील - त्वच्य बल्य केश्य

उष्ण वीर्य हीमस्पर्श मेधाग्निकफपित्तकृत

धान्य प्रकार	कनिष्ठ
शूक्रधान्य	यवक
शिम्भिधान्य	माष

कृतान्न वर्ग -

मंड
पेया
विलोपी
ओदन



प्रकार	मंड	पेया	विलोपी
जल	चतुर्दश (14)	षडगुण (6)	चतुर्गुण (4)
	वातानुलोमनी तडग्लानीदोषशोषधन	क्षत् तृष्णा ग्लानी दोर्बल्य कुक्षिरोग	ग्राही हृदय तृष्णाधनी
	पाचन धातुसाम्यकृत	ज्वरापहा मलानुलोमनी	दीपनी व्रण अक्षिरोग
	स्त्रोतोमार्दवकृत	पथ्या	संशुद्ध दुर्बल
	स्वेदी	दीपनी पाचनी	स्नेहपायी मे हितकर
	संधुक्षयति अनलम्		

कुलत्थयूष -

गुल्म , तूनीप्रतितूनीजीत्

पानक गुण - गुरु विष्टम्भी , श्रमक्षुततटहर क्लमहर

लाजा - छर्दि तृत अतिसार नाशन

सकु - पानात् सदय ऐव बलकर
संतर्पण

पिण्याक - ग्लपन विष्टम्भी दृष्टिदूषण

योनीषु अजा आवि व्यामिश्रगोचरत्वात् अनिश्चिते ।

अजा व आवि व्यामिश्र गोचर के कारण उनकी योनी निश्चित नही

शिखी मांस – श्रोत्र स्वर वय के लिए हितकर

कुकुट मांस – वृद्ध

काणकपौत – सर्वदोषकृत

चटक मांस – इलेष्मल स्निग्ध वातधन शुक्रलः परम्

अजमांस –

नातिशीत गुरु स्निग्ध मांसं आजं अदोषलम् ।

शारीरधातुसामान्याद् अनभिष्यन्दी बृहणम् ॥

गोमांस –

शुष्क कास श्रम अत्यग्नि विषमज्वर पीनस नाशन

काश्य व केवल वातविकार में हितकर

चिलचिम मत्स्य – त्रिदोषकृत

मांस लिंग नुसार गुरुता –

पुल्लिंगी प्राणी	डन्नीलिंगी प्राणी	गर्भिणी
पूर्वभाग – गुरु	अधोभाग – गुरु	गुरु

धातु – उत्तरोत्तर गुरु = रस- रक्त- मांस – मेद- अस्थी – मज्जा – शुक्र

शाकवर्ग –

वास्तुक शाक – वर्चोभेदी

काकमाची – त्रिदोषधन, वृद्ध रसायन

चांगोरी – अर्श ग्रहणी नाशन

जांगल मांस – पित्तोत्तर वातमध्य कफानुग = सान्निपात ज्वर में हितकर

पटोल – हुदय कृमीधन

वार्ताक – कटु तिक्त उष्ण मधुर वातकफधन हुदय

जीवन्ती – त्रिदोषधन ,चक्षुष्य

कुष्मांड – वातपित्तधन, वृद्ध , बस्तीशुधीकर

वल्लीफलो में श्रेष्ठ

त्रपूस – अतिमूत्रल

कुसुम्भशाक – गुरु पित्तकर सर

शाक वर्ग में श्रेष्ठ – जीवन्ती कनिष्ठ – सर्षप

बालमूलक – त्रिदोषधन

महत् (पक्व) मूलक – त्रिदोषकर

शुष्कमूलक – वातकफधन

शाक शुष्क अवस्था में लेना निषेध – अपवाद – मूलक

लशुन – भृश उष्ण तीक्ष्ण

केश्य वृद्ध किलास कुष्ठ गुल्म अर्शोधन

पलांडु – लशुन अपेक्षा न्यून गुण

श्लोष्मल न अतिपित्तकर
कफवातज अर्श मे हितकर
सूरण – दीपन , अशोच्छ
शाक अंग मे गुरुत क्रम –
पत्रे पुधो फले नाले कंदे च गुरुता क्रमात् ।

द्राक्षा – फलोत्तमा (फल वर्ग मे श्रेष्ठ)

वृष्य चक्षस्य सृष्टमूत्रविट

गंभारी फल – केश्य मेध्य रसायन शकृन्मूत्र लिबंधन

प्रियालमज्जा – मधुर वृष्य वातपित्तहर

बिल्व –

बाल बिल्व	पक्व बिल्व	उभय बिल्व
दीपन	दूर्जर	ग्राही
वातकफध्न	दोषल	
	पूर्णीमारुतकृत	

सर्व फल पक्व लेने का निर्देश – अपवाद – बिल्व

आम कपित्थ	पक्व कपित्थ	उभय कपित्थ
कंठधन	हिकका वमथु नाशन	ग्राही
दोषल	दोषधन	विषापह

शमीफल – केशधन

भल्लातक त्वक मास – बृहण स्वादु शीत

भल्लातक अस्थी – अग्निसम (दीपन), मेध्य वातकफध्न

फलवर्ग मे अवर – लकुच – सर्वदोषकृत

लवणवर्ग –

सैंधव – स्वादु, वृष्य, हुदय, त्रिदोषधन

क्षारवर्ग –

क्षार – शुक्र ओज केश चक्षु के लिए अहितकर

हरीतकी – हरीतकी जयेत् व्याधीं तास्तांश्च कफवातजान् ।

बिभितक – केश्य

त्रिफला –

रसायनवरा

अक्षयामयापहा

विषमज्वरनाशन

त्रिजात – त्वक ऐला तमालपत्र

चातुर्जात – त्रिजात + नागकेशर

पिप्ली -

आर्द्र पिप्ली	शुष्क पिप्ली
इलेष्मल	कफवातधन
स्वादु शीत	कटू मधुरविपाकी वृद्धि

नागर – दीपन , हुदय, वृद्धि, मधुरविपाकी, ग्राही

चविका व गजपिप्ली – मरिचसमान गुण

पंचकोल – पिप्ली पिप्लीमूल चव्य चित्रक नागर

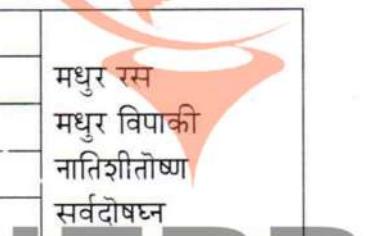
घडूषण – पंचकोल + मरीच

बृहतपंचमूल –



बिल्व	
काशमरी	तिक्क कषाय
तकरी (अग्निमंथ)	उष्ण
पाटला	कफवातधन
टुण्टुक (श्योनाक)	

लघुपंचमूल



बृहती	
कंटकारी	मधुर रस
शालपर्णी	मधुर विपाकी
पृश्नीपर्णी	नातिशीतोष्ण
गोक्खुर	सर्वदोषधन

मध्यम पंचमूल

TIERRA

बला	
पुनर्नवा	कफवातधन
ऐरंड	नातिपित्तकर
मुद्रपर्णी } शूर्पपर्णीद्वय	सर
माषपर्णी } शूर्पपर्णीद्वय	

जीवनीय पंचमूल –

अभीरू (शतावरी)	
वीरा (काकोली)	चक्षुष्य
जीवन्ती	वृद्धि
जीवक	वातपित्तघन
त्रह्षभक	

तृणपंचमूल

दर्भ	पित्तशामक
कुश	
काशा	
नल	
कांडेक्षु	

जीवनीय व मध्यम पंचमूल प्रथम संग्रह व वाग्भट ने वर्णन किये हैं सुश्रुत में नहीं हैं

अध्याय - 7 अन्नरक्षा अध्याय

व्यंजन	विषलक्षण
मांसरस	नीला रंग
क्षीर	तामा
दधि	श्याव
तक्र	पीत असित
घृत	पानीय सक्तिभ
मदय व अम्शा	काली (कृष्ण)
क्षोद्र	हरीत
तैल	अरूण

विरुद्ध आहार उदाहरण -

- 1) मधु सर्पि वसा तल जल इनमेंसे एक दो या तीन का मिश्रण
- 2) दिव्य अनुपानस्त्रह मधु व आज्य (सर्पि)
- 3) मधु + पुष्करबीज
- 4) मधु + मैरेय + शार्कर

विरुद्ध द्रव्य व्याख्या -

यत् किंचित् दोषं उत्क्लेश्य न हरेत् समासतः ।

विषयुक्त अन्न अगिपर डालनेपर शिखिकंठाभ धोमयुक्त अर्चि उत्पत्ती

अपथ्य त्याग (पादांशिक क्रम) -

- 1) पादेन - 1/4 भाग त्याग
- 2) पाद पादेन - 1/16 भाग त्याग

क्रमेण अपचिता दोषाः क्रमेण उपचिता गुणाः ।

न आज्ञुवन्ति पुनर्भावं अप्रकम्प्या भवन्ति च ॥

- 1) दोषो का - क्रम से अपचय करने पर = पुनर्भाव नहीं होता है
- 2) गुणो का - क्रम से उपचय करने पर = प्रकोप नहीं होता है

योग्य अयोग्य निद्रा द्वंद्व –

- 1) सुख – दुःख
- 2) पुष्टि – काश्य
- 3) बल – अबल
- 4) वृषता – क्लीदता
- 5) ज्ञान – अज्ञान
- 6) जीवित – न जीवित

रात्रो जागरण – रूक्ष

प्रस्वपनं दिवा (दिवास्वाप) – स्निग्ध

आसीन प्रचलायित निद्रा – अरूक्ष अनभिष्ठान्दी

दिवास्वाप योग्य ऋतु – ग्रीष्म

इस कारणो से – 1) वायु का चय

2) आदान का रौक्ष्य

3) रात्रि अल्पभावात् (रात्रि समय कम होने से)

ग्रीष्म व्यतिरिक्त अन्य ऋतु में दिवास्वाप लेने से – कफपित वर्धन

ग्रीष्म व्यतिरिक्त अन्य ऋतु में दिवास्वाप लेने योग्य –

- 1) भाष्य यानायान अध्व
- 2) मद्य स्त्रीसेवन भारवहन कर्म क्लान्त
- 3) क्रोध शोक भय क्लान्त
- 4) श्वास हिकाका अतिसार
- 5) वृद्ध बाल अबल क्षीण तृद शूल पिडीत
- 6) अजीर्ण अभिहत उन्मत्त दिवास्वज्ञोचित्

ग्रीष्म ऋतु में दिवास्वाप अयोग्य व्यक्ती –

- 1) मैदकफाधिक्य
- 2) नित्यस्नेहसेवी

रात्रि में भी निद्रा निषिद्ध व्यक्ती –

- 1) विषार्त
- 2) कंठरोगी

अतिनिद्रा चिकित्सा –

- 1) उपवास
- 2) वमन स्वेदन नावन
- 3) तीक्ष्ण प्रच्छर्दन तीक्ष्ण अंजन
- 4) चिंता व्यवाय शोक भय क्रोध

निद्रानाश चिकित्सा –

- 1) क्षीर मांसरस मदय दधि सेवन

2) अभ्यंग उद्वर्तन स्नान मूर्धतर्पण

3) कर्णतर्पण अक्षितर्पण

रात्री जागरन होनेपर – अगले दिन जागरन के अर्धकाल अभुक्त अवस्था में निदा

ग्राम्यधर्म (मैथुन) काल –

1) शिशिर हैमंत = यथेच्छ मैथुन

2) वसंत व शरद – तीन दिन अंतराल से

3) ग्रीष्म व वर्षा = 15 दिन अंतराल से

अध्याय – 8 मात्राशितीय अध्याय

1) मात्राशी सर्वकालं स्यात् – नियमित् मात्रायुक्त भोजन करना चाहिए

2) मात्रा हि अग्ने: प्रवर्तिका – मात्रायुक्त भोजन अग्नि को प्रवर्तीत करता है

3) मात्रा द्रव्याणि अपेक्षन्ते गुरुणी अपि लघुनि अपि

द्रव्य गुरु वा लघु होनेपर भी मात्रा की अपेक्षा करता है

मात्रानुसार द्रव्य सेवन –

1) गुरु द्रव्य – अर्धसोहित्य

2) लघु द्रव्य – नातितृप्तता

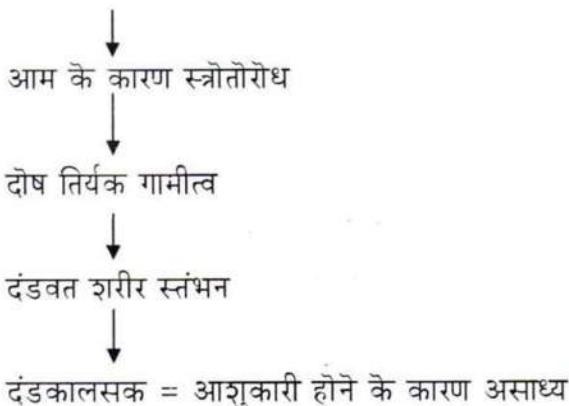
1) हीनमात्र भोजन से – वातरोग / वातप्रकोप

2) अतिमात्र भोजन से – सर्वदोषप्रकोप

व्याधी	अलसक	विसूचिका
हैतु	दुर्बल व अल्पवन्धि व्यक्तीद्वाग वैगधारण	--
संप्राप्ती	प्रयती न उर्ध्व न अधस्तात	
लक्षण	न च पच्यते आमाशये अलसीभूत तीव्रशूलादी उत्पत्ति छर्दि अतिसार वर्जन	विविध वैदज्ञ उद्देश वायादी भृशकोप सूचीभिरिव गात्राणी विध्यती प्रकार – 3 1) वातज – शूल भ्रम आनाह स्तंभ 2) पित्तज – ज्वर अतिसार अंतर्दाह तट प्रलाप 3) कफज – छर्दि अंगगुरुता वाक्संग सर्वप्रथम लंघन ततपश्चात विरेचन पश्चात कर्म समान संसर्जन उपक्रम अतिवृद्ध विसूचिका – पार्ष्णिदाह
चिकित्सा	सर्वप्रथम उल्लेखन (वमन) स्वेदन व फलवर्ती	

दण्डकालसक –

अत्यत दुष्ट दोष



आमदोष – विरुद्ध अध्यशन अजीर्णशिलिनो विषलक्षणम् ।

आमदोषं महाघोरं वर्जयेत् विषसंज्ञकम् ॥

आमदोष = विषसमान

अजीर्ण मे तीव्र वेदना होनेपर भी शूलघ्न औषध नहीं देनी चाहीङ्ग

तीव्रातिरिपि न अजीर्णा पिबेत् शूलघ्न औषधम् ।

आमविकार चिकित्सा –

शान्तिः आमविकाराणां भवति तु अपतर्पणात् ।

अपतर्पण प्रकार – 3

- 1) लंघन – अल्प दोष मे
- 2) लंघन पाचन – मध्य दोष
- 3) दोषावसेचन – प्रभूत दोष मे

अजीर्ण –

आमाजीर्ण	विदग्धाजीर्ण	विष्टब्धाजीर्ण
अक्षिगण्डशौफ सद्योभुक्त इव उद्धार प्रसेक उत्क्लेश गौरव	तृष्णा मोह भ्रम अम्लोद्वार दाह	शूल साद वितंध आध्यान
चिकित्सा – लंघन	चिकित्सा – वमन	चिकित्सा – स्वेदन

विलम्बिका – आम लीन होनेपर होता है

दोषाधिक्य – वातकफ

चिकित्सा – अमाजीर्णसमान

रसशोषाजीर्ण –

लक्षण – अश्रद्धा

हुदय व्यथा

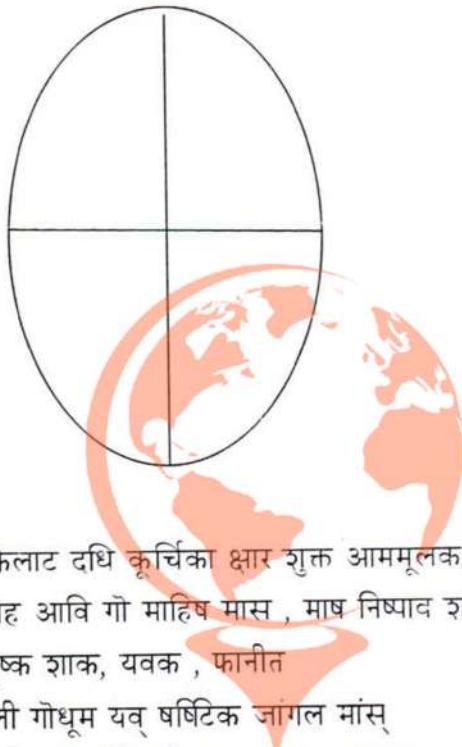
शुध्दे अपि उद्धार

चिकित्सा – आहार सेवन न करते हुऐ दिवा शयन

समशन – पथ्य व अपथ्य ऐकत्र सेवन (मिश्रं पथ्यं अपथ्यं)

अध्यशन – भुक्तस्योपरी भोजनम् । पूर्व भोजन के पचन पूर्व पुनः भोजन

विषमाशन – अकाले बहु च अल्पं वा भुक्तं ।
 अकाले – अप्राप्त काल वा अतीतकाल
 मात्रा की विषमता – अल्पं वा बहु
 विग्नभटानुसार कुक्षि विभाग – 4



नित्य सेवन अयोग्य द्रव्य – किलाट दधि कूर्चिका क्षार शुक्र आममूलक कृश व शुष्क मास
 वाराह आवि गो माहिष मास, माष निष्पाद शालूक बिस पिष्ट विरुद्धकम्
 शुष्क शाक, यवक, फानीत
 नित्य सेवन योग्य द्रव्य – शाली गोधूम यव षष्ठिक जांगल मांस्
 सुनिष्पन्नक जीवन्ती बाल मूलक वास्तुक
 पच्छा आमलकी मृद्धिका पठोल मुदग शर्करा
 घृत दिव्य उदक क्षीर क्षेद्र दाढ़िम सैंधव

त्रफला मधुसर्पिभ्याम् निशी नेत्रबलाय च ।

व्यंजन	अनुपान
यव गोधूम	शीत जल
दधि मदय विष क्षोद्र	शीत जल
पिष्ट पदार्थ	उष्णोदक
शाक मुद्दादी विकृती	मस्तु तत्र अम्ल कांजी
कृश	सुरा
स्थूल	मधुदक
शौष	मांसरस
मांससेवी मंदाग्नि	मदय
व्याधी औषध अध्व भाष्य स्त्री लंघन आतप आदी से क्षीण्	पय
वृद्ध बाल	

- चित्रक = ग्राही
- दन्ती – रेचन = यह कार्य प्रभावजन्य
- 2) मधुक मृद्धिका = मधुर मधुर शीत = इस रसपंचक नुसार रेचन अपेक्षीत नहीं
मृद्धिका – रेचन – यह कार्य प्रभावजन्य
- 3) घृत व क्षीर = गधुर मधुर शीत – इस रसपंचकानुसार क्षीर अग्निदीपक नहीं
घृत – अग्निदीपक – प्रभावजन्य कार्य

समान प्रत्ययरब्ध द्रव्य –

महाभूतानुसार रसपंचक होना



रसपंचकानुसार द्रव्य का कार्य होना

विचित्र प्रत्ययरब्ध द्रव्य – महाभूतानुसार रसपंचक न होना



रस पंचकानुसार द्रव्य का कार्य न होना
उदा. हरीतकी

अध्याय – 10 रसबोदीय अध्याय

रस लक्षण व गुणकर्म – द्रव्यगुण – 1 नोट्स

रस	कर्म	कर्मपिवाद
मधुर	श्लेष्मल	जीर्णशाली, यव, मुदग, गोधूम क्षोड़, सिता, जांगल मांस – न कफकर
अम्ल	पित्तजनन	दाढ़ीम आमलकी
लवण	अचक्षुष्य	सैंधव – चक्षुष्य
कटू	वातकर, अवृष्य	शुंठि कृष्णा रसोन – वातघ्न वृष्य
तिक	वातकर अवृष्य	अमृता पटोल – वातघ्न वृष्य
कषाय	स्तंभन	हरीतकी – अनुलोमन

अध्याय – 1 दोषादिविज्ञानीय अध्याय

दोषधातुमला मूलं सदा देहस्य ।

दोषधातु मल – शारीरक्रिया नोट्स

मलक्षय ज्ञान –

- 1) मलायन शोष
2) मलायन तोद
3) मलायन शून्यत्व
4) मलायन लाघव

इनके द्वारा
होता है

मलसंग से – मलवृद्धी का ज्ञान
 मल अतिविसर्ग से – मल क्षय का ज्ञान होता है
 धात्वाग्नि अतिदिप्ती – धातुक्षय
 धात्वग्नि मांदय – धातुवृद्धी
 मलोचितत्वात् देहस्य क्षयो वृद्धेस्तु पीडेन ।
 दोषादी का क्षय वृद्धी से अधिक पीडाकर होता है

आश्रयाश्रयी संबंध –

अस्थी – वायु
 स्वेद व रक्त – पित्त
 शोष (रस मांस मेंद मज्जा शुक्र) – इलेष्मा
 आश्रय वृद्धी क्षय = आश्रयी वृद्धी क्षय
 अपवाट – अस्थी व वायु
 1) अस्थी वृद्धी – वायु क्षय
 2) अस्थी क्षय – वायु वृद्धी

धातुवृद्धीजन्य विकार व चिकित्सा –

- 1) रक्तवृद्धीजन्य विकार – रक्तसृती व विरेचन
- 2) मांसवृद्धीजन्य विकार – शास्त्र क्षाराग्नि कर्म
- 3) मेंदवृद्धीजन्य विकार – स्थोल्य चिकित्सा
- 4) मेंदक्षयजन्य विकार – कार्श्य चिकित्सा
- 5) अस्थीक्षयजन्य विकार – क्षीरधृत संयुत बस्ती
- 6) विडवृद्धीजनीत विकार – अतिसारोक्त क्रिया
- 7) विटक्षयजन्य विकार – मेष अजमध्य कुल्माष माष यव आदी
- 8) मूत्रवृद्धीजन्य विकार – प्रमेह चिकित्सा
- 9) मूत्रक्षयजन्य विकार – मूत्रकृच्छ्र चिकित्सा
- 10) स्वेदक्षयजन्य विकार – व्यायाम अभ्यंग स्वेद मदय

जाठराग्नि व धात्वग्नि –

स्वस्थानस्य कायाग्नेरंशा धातुषु संश्रिताः । तेषां साद दीप्तिभ्यां धातुवृद्धीक्षयोद्धवः ॥
 कायाग्नि के धातु में संश्रित अंश = धात्वग्नि
 जाठराग्नि वृद्धी – धात्वग्नि वृद्धी
 जाठराग्नि क्षय – धात्वग्नि क्षय

ओज –

ओजस्तु तेजो धातुनां शुक्रान्तानां परं स्मृतम् ।
 स्थान – हृदय
 गुण – स्तिर्ग्रथ सोमात्मक

वर्ण – इषत लोहित पीत
 औज क्षय हेतु – कोप क्षुधा ध्यान (चिंता) शोक श्रम
 औज क्षय – विभेति दुर्बलोऽभीक्षणं ध्यायति व्यथितेंद्रियः। दुश्चायो दुर्मना रूक्षो भवेत् क्षामश्च तत्क्षये
 औज वृद्धी – ओजोविवृद्धौ देहस्य तुष्टिपुष्टिबलोदय ।

अध्याय – 12 दोषभेदीय अध्याय

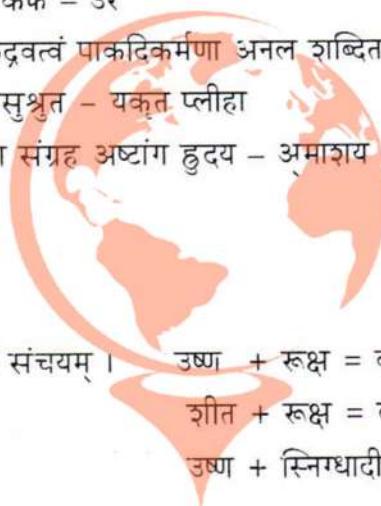
वाग्भटानुसार दोष के विशेष स्थान –

- 1) वात – पक्वाधान
- 2) पित्त – नाभी
- 3) कफ – उर

पाचक पित्त / अग्नि – त्यक्तद्रवत्वं पाकदिकर्मणा अनल शब्दितम् ।

रंजक पित्त स्थान – चरक सुश्रुत – यकृत प्लीहा

अष्टांग संग्रह अष्टांग हुदय – अमाशय



दोष प्रकोप – क्रतुनुसार

1) वात

उष्णेन युक्ता रूक्षादया वायोः कुर्वन्ति संचयम् ।

उष्ण + रूक्ष = वात संचय (ग्रीष्म)

शीतेन कोपं

शीत + रूक्ष = वात प्रकोप (वर्षा)

शमं स्निग्धादयो गुणाः

उष्ण + स्निग्धादी – वात शमन (शरद)

2) पित्त

शीतेन युक्ता तीक्ष्णादयाः चयं पित्तस्य कुर्वते ।

शीत + तीक्ष्ण = पित्त संचय (वर्षा)

उष्णेन कोपं

उष्ण + तीक्ष्ण = पित्त प्रकोप (शरद)

मन्दाद्याः शामं शीतोपसंहिताः

मन्द + शीत = पित्त शमन (हेमंत)

3) कफ

शीतेन युक्ता स्निग्धाद्या कुर्वते इलेघ्मणश्चयम् ।

शीत + स्निग्धादी = कफ संचय (शिशिर)

उष्णेन कोपं

उष्ण + स्निग्धादी = कफ प्रकोप (वसंत)

तेनैव गुणा रूक्षादयः शमम्

रूक्ष + उष्ण = कफ शमन (ग्रीष्म)

चय – चयो वृद्धिः स्वधाम्न्येव ।

प्रद्वेषो वृद्धीहेतुषु

विपरीत गुणेच्छा च ।

कोप – कोपस्तु उन्मार्गगमिता

दोषा ऐव हि सर्वेषां रोगाणाम् ऐक कारणम् ।

त्रिविध रोगमार्ग – शाखा मर्मस्थीसंधी कोष्ठ = विकृती विज्ञान नौटस

कर्मज व्याधी – कर्मक्षय से नाश

दोषज व्याधी – दोषक्षय से नाश

उभयज व्याधी – दोष + कर्मक्षय से नाश

स्वतंत्र /प्रधान व्याधी –

1) स्वजन्मोपशय

2) स्वतंत्र

3) स्पष्टलक्षण

परतंत्र / अप्रधान व्याधी – उपरोक्त विपरीत लक्षण

सान्निपात भेद – 13

दोषभेद विकल्प – $62 + 1$ (सम दोष) = 63

अध्याय – 13 दोषान्पत्रमणीय अध्याय

1) वातदोष उपक्रम –

स्नेहन स्वेदन मृदू संशोधन

स्वादु अम्ल लवण उष्ण भोजन

अभ्यंग मर्दन

वैष्ण त्रासन सेक

गौडिक पैष्ठिक मदय

स्निग्धोष्ण बस्ती, बस्तीनियमा सुखशीलता (मात्रा बस्ती)

टीपन पाचन सिध्द स्नेह

मेदय पिशित रस तैल का अनुवासन

2) पित दोष उपक्रम –

सर्पिपान

विरेचन – स्वादु शीत

भोजन व औषध – स्वादु तिक्त कषाय

सुगंध शीत हुदय गंध सेवन

लेप – कर्पूर चन्दनादी द्रव्य का शीत लेप

प्रदोष काले चंद्रांशु सेवन

शीताम्बु धारा, गर्भगृह

3) कफ दोष उपक्रम –

तीक्ष्ण वमन रेचन

अन्नं रूक्षात्पतीक्ष्णोष्णं कटुतिक्तकषायकम्

दीर्घकाल स्थित मदय

रतिप्रिती प्रजागर

व्यायाम चिन्ता रूक्ष विमर्दनम्

यूष क्षोद्र मेदोष्न औषधम्

धूम उपवास गंडूष
निसुखत्वं सुखाय च

दोषानुसार ऋतुचर्या –

- वातपित्त – ग्रीष्म ऋतुचर्या
- वातकफ – वसंत ऋतुचर्या
- कफपित्त – शरद ऋतुचर्या

दोष चिकित्सा - चय ऐव जयेत् दोषं कुपितं तु अविरोधयन् ।

सर्व कोपे बलीयासं शोषदोषाविरोधतः ॥

- 1) दोषों को उनकी चयावस्था में ही जितना चाहिए
- 2) कुपित दोष का प्रतिकार करते समय इतर दोषों का विरोध न हो
- 3) सर्व दोषों का कोप होनेपर बलवान् दोषकी प्रथम चिकित्सा करे पश्चार शोष की

शुद्ध चिकित्सा –

- प्रयोगः शमयेद् व्याधीं यो अन्यम् अन्यं उदीरयेत् ।
न असौ विशुद्धः
एक व्याधी का शमन् करते हुए अन्य व्याधी का उदीरण् यह शुद्ध चिकित्सा नहीं है
- शुद्धस्तु शमयेत् न कोपयेत् ॥
एक व्याधी का शमन करते हुए अन्य का कोप न करे वही शुद्ध चिकित्सा है

दोष कोढ से शाखा में गमन के कारण – 4

- 1) व्यायामात्
- 2) उर्घणः तैक्षण्यात्
- 3) अहित् आचरणात्
- 4) द्रुतत्वात् मारुतस्य्

TIERRA

दोष शाखा से कोष्ठ में लाने के उपाय – 5

- 1) स्त्रोतोमुखविशोधनात्
- 2) वृद्धी
- 3) अभिष्यंदनात्
- 4) पाकात्
- 5) वायोश्व निग्रहात्

तिर्यकगत दोष – क्लेशकर

प्रायः तिर्यकगताः दोषाः क्लेशयन्ति आतुरः चिरम् ।

कुर्यात् न तेषु त्वरया देह अग्निबलवित् क्रियाम् ॥

उनकी चिकित्सा –

- 1) शमयेत् तान् प्रयोगेण सुखं वा कोष्ठमानयेत् ।
- 2) ज्ञात्वा कोष्ठप्रपन्नाश्च यथासन्नं विनिहरेत् ।

आम व्याख्या –

उष्मणो अल्पबलत्वेन धातुं आदयं अपाचितम् ।
दुष्टं आमाशयगतं रसं आम प्रचक्षते ॥

आम लक्षण –

डन्नोतोरोध बलभ्रंश गौरव अनिलमूढता ।
आलस्य अपक्ति निष्ठिव मलसंग अरुची क्लमः ॥

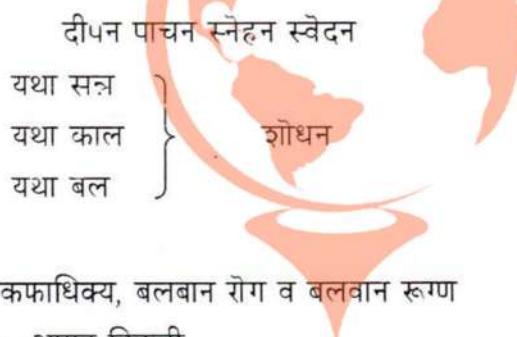
आम उपमा – कोट्रवि विषस्य

आम चिकित्सा –

- | | | |
|------------------------------|---|-----------|
| 1. सर्व देह प्रविसृत साम दोष | } | न निहरेत् |
| 2. धातु में लीन दोष | | |
| 3. अनुत्क्लिष्ट दोष | | |

आमफल से रस निकालने जैस आश्रय का नाश होता है

उपरोक्त साम दोष चिकित्सा –



औषध सेवन काल –

- 1) अनन्त – कफाधिक्य, बलबान रोग व बलवान रूण
- 2) अन्नादौ – अपान विकृती
- 3) अन्नमध्य – समान विकृती
- 4) अन्न अन्ते –

प्रातः कालीन भोजनोत्तर – व्यान विकृती
सायंकालीन भोजनोत्तर – उदान विकृती
- 5) ग्रासग्रासान्तर
- 6) ग्रासे } प्राण विकृती
- 7) मुहुर्मुहु – विष छर्दि हिकका तृष्णा श्वास कास
- 8) स अन्न – अरोचक
- 9) सामुदग – कंप आक्षेपक हिकका (सामुदग – भोजनपूर्व व भोजनपश्चात)
- 10) निशाकाल (स्वप्नकाल) – उर्ध्वजन्मुगत विकार

अध्याय – 14 द्विविधोपक्रमणीय अध्याय

द्विविधोपक्रम –

- 1) संतर्पण = बृहण
- 2) अपतर्पण – लंघन

वाग्भटानुसार लंघन प्रकार – 1) शोधन

2) शमन

शोधन प्रकार – 5

1) वमन 2) विरेचन 3) शिरोविरेचन 4) निरूह 5) अस्त्रविस्त्रुती

शमन –

न शोधयति दोषान् समान् न उदीरयति ।

समीकरोते विषमान् शमनं तच्च सप्तथा ॥

सप्त शमन – दीपन पाचन क्षुत तृट व्यायाम आतप मारुत

वात व पित्तश्रित वात मे बृहण ही शमन है = बृहणं शमनं त्वेव वायोः पित्तनिलस्य च ।

बृहण चिकित्सा योग्य –

- 1) व्याधी भैषज्य मदय स्त्री शोक कर्शित
- 2) भार अध्व उरःक्षत से क्षीण
- 3) रुक्ष दुर्बल वातल्
- 4) गर्भिणी सूतिका बाल वृद्ध
- 5) ग्रीष्मे अपरानपि

बृहणार्थ द्रव्य –

क्षीर	स्वज्ज	स्नान
सर्पि	शय्यासुख	निर्वृती
मांस	आभ्यंग	हर्ष

लंघन योग्य –

मेह आमदोष अतिस्मिन्द्वय ज्वर उरुस्तंभ
कुष्ठ विसर्प विद्रधी प्लीहरोग
शिर कंठ अक्षिरोगी
स्थूलांश्च लंघयेत् नित्यं शिशिरे तु अपरानपि

तीन प्रकार से लंघन –

शोधनाद्वारा लंघनीय	
स्थूल बलवान् पित्तकफाधिक्य	आमदोष ज्वर हुदामय
अतिसार विबंध छर्दि	गौरव उद्धार हुल्लास
पाचन दीपनाद्वारा लंघनीय	
उपरोक्त विकार मध्यम बल होनेपर	
वात आतप आयास इ द्वारा लंघनीय	
उपरोक्त विकार अल्प बल होनेपर	

न बृहयेत् लंघनीयान बृहयास्तु मृदू लंघयेत्

लंघनीय व्यक्ति – न बृहयेत्

बृहणीय व्यक्ति – मृदू लंघयेत्

अति बृंहण दोष –

अतिस्थौल्य अपची मेह ज्वर उदर भगन्दर कास संन्यास मूत्रकृच्छ्र कुष्ठ

अतिलंघन दोष –

श्वास वर्चोमूत्रग्रह ज्वर कास छर्दि पार्श्वरूजा ग्लानी

अतिस्थौल्य चिकित्सा –

1) कुलतथ शामाक जूर्ण यव मुदग मधुदक

2) मस्तु तक्र अरिष्ट

3) चिंता शोधन जागरन

4) त्रिफला + मधु

5) गुडूची + अभया

6) रसांजन (स्थूलेषु ताक्षर्य)

7) महत् पंचमूल + गुगुल

8) शिलाजतु अग्निमंथ रसासह

9) विडंग नागर क्षार काललोहरज (मण्डूर) मधुसह

10) यव आमलकी चूर्ण

स्थौल्य व काश्य तुलना –

काश्य ऐव वरं स्थौल्यं न ही स्थूलस्य भेषजम् ।

बृंहणं लंघनं नालमतिमेदोऽग्निवातजित् ॥

काश्य यह स्थौल्य से श्रेष्ठ है

स्थौल्य श्रेष्ठ न होने का कारण –

1) लंघन से – मेदक्षण परंतु अग्नि व वात वर्धन

2) बृंहण से – वातशमन परंतु मेदोवर्धन

काश्य चिकित्सा –

अचिन्तया हर्षणेन ध्रुवं संतर्पणेन च ।

स्वजप्रसंगाच्च नरो वराघ इव पुष्यति ॥

1) अचिंता

2) ध्रुव

3) स्वप्न

बृंहण गो मांस श्रेष्ठता –

न हि मांससमं किचित् अन्यदेहबृंहत्वकृत ।

मांसदमांसं मांसेन् संभृतत्वाद् विशेषतः ॥

स्थूल – गुरु अपतर्पण

कृश – लघु संतर्पन

यव गोधूम – कृश व स्थूल उभय के लिए हितकर (गोधूम – कृश, यव – स्थूल)

यव गोधूम – स्थूल व कृश हितकर
पूरण यव, गोधूम – वसंत ऋतुचर्या
यव आमलक चूर्ण – स्थौल्य चिकित्सा
मदय – स्थूल कृश हितं
मदय – नष्ट निद्रा अतिनिद्रेभ्यो हितं
तीलतैल – कृशानां बृहणायालं स्थूलानाम् कर्शनाय

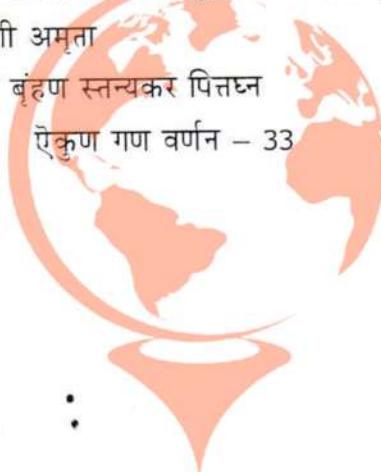
अध्याय – 15 शोधनादी गण संग्रह

पद्धकादी गण – वरकोक्त जीवनीय गण 10 द्रव्य + पदमक पुण्डरीक वृद्धी तुगाक्षिरी

कर्कटश्रुंगी अमृता

कार्य – प्रीणन जीवन वृद्ध बृहण स्तन्यकर पित्तघ्न

इतर गण – सुश्रुतसमान ऐकुण गण वर्णन – 33



TIERRA

अष्टांगहृदय – सूत्रस्थान्

अध्याय – 15 स्नेहाध्याय

सर्पि = सर्व स्नेह में उत्तम – संस्कारानुवर्ती होने से

घृत – – मज्जा – – वसा – – तैल
↓

यथोत्तर वातकफद्धन व यथापूर्व पित्तघ्न

यथोत्तर गुरुता क्रम – घृत तैल वसा मज्जा

स्नेह मिश्रण –

यमक स्नेह – दो स्नेहो

त्रिवृत स्नेह – तीन स्नेह

महान स्नेह – चार स्नेह

स्नेहन योग्य –

स्वेदय , संशोध्य

मद्य स्त्री व्यायाम आसक्त, चिन्तक

वृद्ध, बाल अबल कृश क्षीणास्त्ररोतस

वातार्त स्यंद तिमिर, दारूण प्रतिबोधिन (कृच्छान्मीलन)

स्नेहन अयोग्य –

अतिगन्दाग्नि अतिरीक्षणाग्नि अतिस्थूल अतिरुबल

उरुस्तंभ अतिसार आम गलरोग गर उदर

मूर्च्छा छर्दि अरुची इलेष्मा तुष्णा मदयव्विकार

अपप्रसूता युक्त नस्यौ युक्त बस्ती व युक्त विरेचन

स्नेहपान काल –

तैल – प्रावृट

सर्पि – वर्षान्ते (शरद)

वसा मज्जा – माधव

स्नेह प्रकार –

1) अच्छ स्नेह – केवल स्नेह

2) विचारणा स्नेह – आहारादी कल्पना सह दिया जानेवाला

स्नेह मात्रा –

कल्पयेद् वीक्ष्य दोषादीन् पागेव तु हसीयसीम् ।

हसीयसी – स्नेह की अल्प मात्रा

दोषादी व कोष्ठ का ज्ञान होनेपर अल्प मात्रा



	शमन् स्नेह	शोधन स्नेह	बृहण स्नेह
अन्नकाल	क्षुद्रतो अन्ननौ	जीर्ण ऐव अन्ने	सभक्त
मात्रा	मध्यम मात्रा	उत्तम मात्रा,	अल्प मात्रा
व्यंजन		अच्छ स्नेह	रस मदय आदि सह

बृहण स्नेह योग्य –

कृश	मदयसेवी	मृदूकोष्ठ
बाल	स्त्री सेवी	अल्प दोष
वृद्ध	नित्य मन्दाग्नि	स्नेह द्विट
भीरु	क्लेश असह	उष्ण काल

सेवन काल नुसार स्नेह कार्य –

- 1) प्राक भक्त – अधःकाय बलाधानार्थ
- 2) मध्य भक्त – मध्य काय बलाधानार्थ
- 3) अधो भक्त – उर्ध्व काय बलाधानार्थ

स्नेहपान पश्चात – उष्णोदकपान

अपवाद = भल्लातक व तुवरक तैल

स्नेहपान काल –

- 1) मृदू कोष्ठ – 3 दिन
- 2) मध्यम कोष्ठ – 5 दिन
- 3) क्रुर कोष्ठ – 7 दिन

सम्यक स्निग्ध लक्षण –

- 1) वातानुलोमन
- 2) दीप्तोग्नि
- 3) वर्च स्निग्ध असंहत्
- 4) मृदू स्निग्धांगता
- 5) अंगलाघव
- 6) विमलेंद्रियता

अतिस्निग्ध लक्षण –

- 1) पांडू
- 2) घ्राण वक्र गुद स्त्रवा

स्नेहव्यापद चिकित्सा –

- 1) क्षुधा व तृष्णा अवरोध
- 2) उल्लेखन स्वेदन रूक्ष पानान्न भोजनम्
- 3) तक्रारिष्ट खल उदालक यव श्यामाक कोट्रव
- 4) पिप्पली त्रिफला पथ्या क्षोद्र गोमत्र गुगुल्

स्नेहन स्वेदन पश्चात – द्वितीय दिने वमन

तृतीय दिने विरेचन

स्नेहपान पूर्व रूक्षण योग्य व्यक्ति –

मांसला मेंदुरा भूरिश्लेष्माणो
स्नेहोचित
विषमाग्नि

सदयस्नेह-

बालवृद्धादिषु स्नेहपरिहार असहिष्णुषु । योगानिमाननुद्वेगान् सदयः स्नेहान् प्रयोजयेत् ॥

1) पांचप्रासृतिकी पेया – चतुर्विध स्नेह + तंडुल = प्रत्येकी 1 प्रसृत

लवन सह स्नेहन –

सद्य स्नेहन = कारन – लवण विष्णंदी अरूक्ष सूक्ष्म व्यवायी होने से

कुष्ठ शोथ प्रमेह मे निषिद्ध स्नेह-

ग्राम्य औदक आनूप मांस, गुड, दधि, पय, तिल,

अध्याय 16 स्वेदाध्याय –

स्वेद प्रकार – 4

- 1) जाप स्वेद- अग्नितप्त फाल हस्ततलादी द्वारे दिया जानेवाला
काशयप – जातस्य चतुरो मासात् हस्तस्वेदं प्रयोजयेत् ।
- 2) उष्मस्वेद- उत्कारिका लोष्टक आदी द्वारा दिया जानेवाला
- 3) उपनाह स्वेद- वचा किणव देवदारु आदी द्रव्यो को गरम कर चर्मप या वस्त्र मे बांधकर
कफसंसृष्ट वात – सुरसादी गण द्रव्य उपनाह
पित्तसंसृष्ट वात – पद्मकादी गण द्रव्य उपनाह
- 4) द्रव स्वेद-वातहर क्वाथ दुग्ध मांसरस तैल धान्याम्ल आदी द्रव द्वारा दिया जानेवाला

प्रकार- 2 1) परिषेक 2) अवगाह

दोषानुसार स्वेद –

- 1)कफाधिक्य – रूक्ष स्वेद
- 2) वातकफाधिक्य – रूक्ष स्निग्ध स्वेद

स्थानानुसार स्वेद-

- अ) 1) आमाशयगत वात – रूक्षपूर्वक स्वेद
- 2) पक्वाशयगत कफ – स्निग्धपूर्वक स्वेद
- ब) 1) वंक्षण – अल्प
2)दृक मुष्क हृदय – स्वल्प वा न

सम्यक स्विन्न लक्षण-

शीतशूलव्यूपरसे स्तंभ गौरव निग्रहे । संजाते मार्दवे चैव स्वेदनात् विरतिर्मता ॥ सु.चि.

स्वेद अतियोग चिकित्सा-

चरक- ग्रीष्म ऋतुचर्या

वाग्भट- स्तंभन

सुश्रुत – शीत उपचार
काश्यप – विसर्प समान चिकित्सा

स्वेदन औषध – गुरु तीक्ष्ण उष्ण

स्तंभन औषध – तिक्त कषाय मधुर

स्वेदन अयोग्य –

- 1) अतिस्थूल रूक्ष दुर्बल मूर्च्छित
- 2) स्तंभनीय
- 3) क्षतक्षीण क्षाम मद्य विकारी
- 4) तिमिर उदर विसर्प कुष्ठ शोष आढयगेंगी (वातरक्त)
- 5) पीत दुग्ध दधि स्नेह मधु,
- 6) कृत्विरेचन
- 7) भ्रष्ट दग्ध गुद, ग्लानी,
- 8) क्रोध शोक भय
- 9) क्षुत तृष्णा कामला पांडू मधुमेह पित्तपीडीत
- 10) गर्भिणी पुषिता सूता

अपवाद – अत्ययिक अवस्था में मद्द स्वेद देय

स्वेदन योग्य –

- 1) श्वास कास प्रतिश्या हिध्मा
- 2) आध्मान विबंध
- 3) स्वरभेद अनिल व्याधी इलोम्ब आमदोष स्तंभ गौरव
- 4) अंगमर्द कटिपाश्च पृष्ठकुक्षिं हनुग्रह
- 5) मुष्कवृद्धी खल्ली आयाम वातकंटक
- 6) मूत्रकृच्छ अर्बुद ग्रंथी शुक्रघात आढय मारुत (उरुस्तंभ)

मेद कफावृत वात – में अनग्नि स्वेद हितकर

अनग्नि स्वेद – 10

- | | | | |
|------------|--|------------------------|-----------------|
| 1) व्यायाम | 2) आहव (युध्द) | 3) उष्णसदन (निवात गृह) | 4) गुरु प्रावरण |
| 5) भय | 6) क्रोध | | |
| 7) क्षुधा | 8) बहुपान (अधिक मदयपान) वाग्भट – भूरीपान | | |
| 9) आतप | | | |
| 10) उपनाह | | | |

अध्याय – 18 वमन विरेचन विधी अध्याय

स्थूल = स्नेहन अयोग्य

अतिस्थूल = स्वेदन अयोग्य

स्थूल व कृश – वमन अयोग्य अनुवासन अयोग्य

हृदोग – वमन अयोग्य (च. व वाग्भट)

वमन योग्य – सुश्रुत

विरेचन अयोग्य – वाग्भट

विरेचन योग्य – चरक

गुल्म तिमिर – स्नेहन योग्य, विरेचन योग्य

स्वेदन व वमन अयोग्य

नवज्वर – वमन योग्य, विरेचन अयोग्य

जीर्णज्वर – विरेचन योग्य

गुल्म – स्नेहन योग्य, वमन अयोग्य, विरेचन योग्य

स्यन्द – स्नेहन विरेचन योग्य

कृमी – वमन अनुवासन अयोग्य, विरेचन योग्य

वमन विधी –

वमन पूर्व आहार – मत्स्य मास तीलादिभी कफ उत्क्लेश कर

वमनसमये योग – निरन्नम् इष्ट स्निग्धे वा पेयया पीतसर्पिषम्

आतुरपरिचर्या –

वमनयोगपानपश्चात् – प्रतिक्षा – 1 मुहुर्त

वमनार्थ औषध –

वात दोष – स्निग्ध अम्ल लवण

पित दोषार्थ – स्वादु हिम

कफ दोषार्थ – कटु तिक्त उष्ण

वमन मर्यादा –

पित्तस्य दर्शनं यावत् छेदो जा इलेष्मणो भवेत् ।

हीन वेग चिकित्सा –

कणा धात्री सिध्दार्थक लवण उदक से पुनः पुन; प्रवर्तन

वमन योगादी –

हीन योग	सम्यक योग	अतियोग
वेगानामप्रवर्तन	निर्विर्बंधं प्रवर्तते	फैनचंद्रकवत वमन
प्रवृत्तीः सविबन्ध वा	कफपित्तअनिलाः क्रमात्	क्षामता दाह कंठशोष तम भ्रम
केवलस्य औषधं वा	गमन	घोर वाय्वामय
निषिव कंडू कोठ ज्वरादी		मृत्युः जीवशोणित निर्गमात्

वमन पश्चात कर्म – त्रिविध धूम मेसे ऐक आचरण (स्निग्ध मध्यम तीक्ष्ण)

संसर्जन क्रम-

पेयां विलेपीमकृतं कृतं च यूषं रसं त्रिद्विरथैकश्च ।

ऋगेण सेवेत विशुद्ध कायः प्रधानमध्य अवरशुद्धिशुद्धः ॥ च. सि. 1/1द्

प्रधान मध्य अवर शुद्धि के लिए पेया-विलेपी-अकृत यूष-कृतयूष- अकृत मांसरस- कृत मांसरस

ऋग्मशः तीन अन्नकाल दो अन्नकाल व एक अन्नकाल देने चहिए।

संसर्जन ऋग्म फलश्रुति-

यथाऽणुरग्निस्तृणगोमयादयैः संधुक्ष्यमानो भवति ऋग्मेण।

महान् स्थिरः सर्वपचस्तथैव शुद्धस्य पैयादिभिरंतराग्निः

- अग्नि
- 1) महान
 - 2) स्थिर
 - 3) सर्व पचनक्षम

वमन- विरेचन शुद्धी बोधक सारणी

शुद्धी	प्रवर शोधन	मध्यम शोधन	जघन्य शोधन
वमन			
वेगिकी	8 वेग	6 वेग	4 वेग
मानिकी	2 प्रस्थ	1 प्रस्थ	1/2 प्रस्थ
आन्तिकी	पित्तान्त	पित्तान्त	पित्तान्त
विरेचन			
वैगिकी	30 वेग	20 वेग	10 वेग
मानिकी	4 प्रस्थ	2 प्रस्थ	1 प्रस्थ
आन्तिकी	कफान्त	कफान्त	कफान्त

विरेचन -

योग्य काल – इलेष्म गते काले

कोष्ठ प्रकार – 3

- 1) मृदू कोष्ठ – बहुपित्तो मृदू कोष्ठ क्षीरेणपि विरिच्यते।
- 2) क्रुर कोष्ठ – प्रभृत मारुतः क्रुर कोष्ठ कृच्छ्रत् स्यामादिकैरपि

दोषानुसार विरेचन औषध –

- 1) वातदोष – स्निग्ध उद्धा लवण
- 2) पित्तदोष – कषाय मधुर
- 3) कफ दोष – कटुक

विरेचन अप्रवृत्ति चिकित्सा –

उष्णाम्बु पान

उअदरस्थाने पाणिताप से स्वेदन

विरेचन सम्यक योग हीन अतियोग लक्षण–

हीन योग	सम्यक योग	अतियोग
इलेष्मपित्तौत्क्लेष हुत्कुक्षि अशुद्धी , पीनस, पिटिका अरोचक, कंडू, विदाह वातविडग्रह	प्राप्तिश्व विटपित्त कफानिलानां ----- स्त्रोतोविशुद्धी इंद्रियसंप्रसाद, लघुत्व, उर्जा, अनामयत्व, मनतुष्टी	,निःइलेष्मपित्त श्वेत कृज्ञ लोहित मांसधावनतुल्य मेदखंडाभ मलनिस्सरण, नेत्रप्रवेशन, गुदनिस्सरण, तृष्णा, भ्रम

विरेचन पश्चात् कर्म –

वमनोक्त विधि परंतु धूमवर्जीत

संसर्जन क्रम अपवाद-

- 1) स्नृत अल्प पित्त इलेष्माणं
- 2) मद्यपी
- 3) वातपित्ताधिक्य

} पेयां न पाययेत्

} तर्पणादी क्रम हितकर

वमनादी मे दोष निर्हरण –

अपक्वं वमनं दोषं पच्यमानं विरेचनं । निहरेद् वमनः स्यात् पाकं न प्रतिपालयेत् ॥

वमन मे – अपक्व दोष निर्हरण

विरेचन मे – पच्यमान दोष निर्हरण

वमन मे – पाक की प्रतिक्षा नहीं करनी चाहिए

विरेचन मे भेदन औषध –

दुर्बलो बहुदोषश्च दोष पाकेन यः स्वयम् ।

विरेच्यते भेदनीयै भोजैः तम् उपपादयन् ॥ अ.हु. सू18/48

- 1) दुर्बल बहुदोष व्यक्ति मे दोषपाक से स्वयम् विरेचन प्रारभ हो तो उसे भेदनीय आहार देना चाहिए ।

विरेचनार्थ मृदू औषध योग्य –

दुर्बल पूर्वशोधितः पूर्वमल्पदोषः कृशो नरः ।

अपरिज्ञातकोष्ठश्च पिबेत् मृदू अल्प औषधम् ॥

- | | |
|--------------------|-----------------------|
| 1) दुर्बल रूगण | } मृदू व अल्प औषध देय |
| 2) पूर्वशोधीत रूगण | |
| 3) अल्प दोष रूगण | |
| 4) कृशो नर | |
- 5) अपरिज्ञात कोष्ठ

मन्दाग्नि व क्रूर कोष्ठ मे शोधन –

मन्दाग्नि } अग्निसंधुक्षणार्थ व कफवात जयार्थ
क्रूर कोष्ठ } सक्षारलवण घृत पान

- | | |
|----------------|---|
| 1. रूक्ष | } भैषज्य अविरेच्य ऐव जीर्यती (विरेचन न होते हुए भैषज जरण) |
| 2. बहु अनिल | |
| 3. क्रूर कोष्ठ | |
| 4. व्यायाम शील | |
| 5. दीप्ताग्नि | |
- तैभ्यो बस्ती पुरा दद्यात्
- ततः स्निग्धं विरेचनम् ।

अतिस्निग्ध विरेचन अयोग्य –

विष अभिघात पिटिका कुष्ठ शोफ विसर्प
कामला पांडु मैह

शोधन के मध्य में स्नेहन व स्वेदन –

कर्मणां वमनादीनां पुनः अपि अन्तरे अन्तरे ।
स्नेह स्वेदौ प्रयुक्तिं स्नेहमन्ते बलाय च
दो शोधनों के मध्य में रूग्ण को स्नेहन स्वेदन व बलार्थ अन्ते स्नेहन करें ।

अध्याय – 19 बस्तीविधि अध्याय

बस्ती प्रकार – 3

निरूह अनुवासन व उत्तर बस्ती

आस्थापन योग्य	आस्थापन अयोग्य
गुल्म आनाह खुड (वातगत), प्लीह, शूल शुद्धातिसार, जीर्णज्वर, प्रतिश्याय, शुक्र अनिल व मलग्रह वर्ध्म अश्मरी, रजोनाश दारूण अनिलरोग	अतिस्निग्ध, क्षतोरस्क, भृश कृश, आमातिसारी, वमिमान, संशुद्ध, दत्तनावन कास श्वास प्रमेह, अर्श हिध्मा आध्मान अल्पवर्चस, शून्यपायी, कृताहारो, बध्दोदर छिद्रोदर दकोदर कुष्ठ मधुमैह व सप्तमासतक गर्भिणी

अनुवासन अयोग्य

पांडु कामला मैह पीनस निरन्त्र प्लीह विडभेट गुरु कोष्ठ
कफोदर अभिष्ठद, कृश स्थूल कृमीकोष्ठ आढ्यमारूत (उरुस्तंभ)
विष गरविष इलीपद गलशंड

आस्थापन योग्य = अनुवासन योग्य

आस्थापन अयोग्य = अनुवासन अयोग्य

बस्तीनेत्र –

आकार – गोपुच्छाकार

स्वरूप – अच्छीद्र श्लक्षण मृदू ऋजु

मुख – गुलिकामुख

बस्ती नेत्र लंबाइ

1 वर्ष से कम	5 अंगुल
1 से 7 वर्ष से कम	6 अंगुल
7 वर्ष	7 अंगुल
12 वर्ष	8 अंगुल

16 वर्ष	9 अंगुल
20 वर्ष पश्चात	12 अंगुल

बस्ती नेत्र – मूलस्थाने = अंगुष्ठसम

अग्रस्थाने = कनिष्ठिका सम

निरूह मात्रा –

- 1) प्रथमे (प्रथम वर्ष – 1 प्रकुंच (4 तोला)
- 2) 12 वर्षपर्यन्त प्रतिवर्ष 1 प्रकुंच वर्धन (12 वर्ष = 12 प्रकुंच)
- 3) 18 वर्षपर्यन्त 2 प्रकुंच वर्धन (18 वे वर्ष = 24 प्रकुंच)
- 4) 70 वर्षपर्यन्त – यही प्रमाण

अनुवासन मात्रा –

यथायथं निरूहस्य पादो मात्रा अनुवासने ।

निरूह के 1/4 (पाद भाग) मात्रा अनुवासन

ऋतुनुसार अनुवासन काल –

शीते वसन्ते दिवा अनुवास्यो – शीत काल = वसंत शिशिर हेमंत – दिन में
अन्य ऋतु = शरद ग्रीष्म वर्षा – रात्रि में अनुवासन

बस्ती दान सावशेष दे –

सावशेषच कुर्वीत वायुः शोषे तिष्ठति ।

बस्ती दान स्थिती –

वाम पार्श्व शयन

बस्ती पश्चात स्थिती –

उत्तान शयन कर स्थिक स्थाने ताडन

पार्ष्णि की तरफ से शाय्या तीन् बार उत्थेपण

अनुवासन निवृत्ति काल –

3 याम (9 तास)

अनुवासन बाहर ने आने पर उपेक्षा – 1 अहोरात्रीपर्यन्त

ततपश्चात – फलवर्ती व अन्य तीक्ष्ण बस्ती दान

नित्य अनुवासन योग्य –

उल्बंण मरुत

नित्य व्यायाम करनेवाले

दीप्ताम्बिनि

अनुवासन बस्ती दान काल – मध्याह्न काले

निरूह बस्ती निर्माण –

- 1) क्वाथ्य द्रव्य – 20 पल
- 2) मदनफल – 8 फल
- 3) स्नेह – वाताधिक – 1/4 पित्ताधिक/स्वस्थ – 1/6 कफाधिक – 1/8

4) कल्क – 1/8

5) गुड – 1 पल

6) मधु सैंधव – यथायोग्य

बस्ती स्वरूप – नातिसान्द्र नाति अच्छ, आतिमात्र नातिस्निघ्द नातितीक्षण

बस्ती निर्माण क्रम –

माक्षिकं लवणं स्नेहं कल्कं क्वाथं इति क्रमात् ।

निरूह प्रत्यागम काल – 1 मुहूर्त

निरूह प्रत्यागम न होनेपर –

1) स्नेह क्षारमूत्रयुक्त अन्य स्निग्ध तीक्ष्णोष्ण बस्ती

2) फलवर्ती

3) स्वेदन त्रासन आदी किया

निरूह पश्चात कर्म – विरेचन पश्चात कर्म समान

निरूह पश्चात आहार – धन्व रस व ओदन

अनुवासन सम्यक हीन अतियोग लक्षण – स्नेहपान सम्यक हीन अतियोग समान जाने ।

दोषानुसार स्नेह बस्ती –

1) कफाधिक्य – 1 वा 3

2) पित्ताधिक्य – 5 वा 7

3) वाताधिक्य – 9 वा 11

निरूह पश्चात दोषानुसार पथ्य –

1) वाताधिक्य – मांसरस

2) पित्ताधिक्य – धीर

3) कफाधिक्य – यूष



TIERRA

निरूहार्थ क्वाथ –

1) वाताधिक्य – त्रिवृतादी द्रव्य

2) पित्ताधिक्य – न्यग्रोधादी गण

3) कफाधिक्य – आरग्वधादी गण

बस्ती दान क्रम –

1) उत्क्लेशन

2) शोधन

3) शमन

बस्ती प्रकारानुसार संख्या –

1) योगबस्ती – 8

2) काल बस्ती – 15 (चरक 16)

3) कर्म बस्ती – 30

1) कर्म बस्ती -

प्रथम स्नेह बस्ती - मध्ये 12 निरूह व अनुवासन - अंत मे 5 स्नेह बस्ती

2) काल बस्ती -

प्रथम स्नेह बस्ती - मध्ये 5 निरूह व 6 अनुवासन बस्ती - अंत मे 3 स्नेह बस्ती

3) योग बस्ती -

प्रथम 1 स्नेह बस्ती - मध्ये 3 निरूह व 3 अनुवासन - अन्ते 1 स्नेह बस्ती

ऐकांतिक निरूह बस्ती -

मारुत भय

ऐकांतिक अनुवासन बस्ती -

उत्क्लेश व अग्निवध

मात्रा बस्ती -

मात्रा बस्ती मात्रा - अभ्यंतर स्नेहपान की हस्त मात्रा

मात्रा बस्ती योग्य -



गुणधर्म - दोषधनो निष्परीहार बल्यः सृष्टमलः सुखः ।

उत्तर बस्ती -

अर्ह - पुरुषो मे बस्तीरोग

डन्नीयो मे योनी गर्भाशय रोग

पूर्वकर्म - 2 या 3 आस्थापन

नेत्रप्रमाण - पुरुष - 12 अंगुल सुश्रुत - 14 अंगुल

स्त्री - 10 अंगुल

कर्णिका - 2

अग्रभाग - सिद्धार्थ प्रवेश सम

औषधमात्रा - 1 शुक्ती

डन्नीयो मे उत्तर बस्ती -

योग्य काल - स्त्रीणां आर्तवकाले तु योनी गृह्णाति अपावृते ।

आर्तव काले - ऋतुकाली

योग्य व्याधी - योनीभ्रंश योनीशूल योनीव्याद असृगदर

नेत्रप्रमाण - 10 अंगुल

अग्रभाग - मुदगसम

नेत्रप्रवेशनम् -

1) अपत्यमार्ग - 4 अंगुल

- 2) मूत्रमार्ग – 2 अंगुल
- 3) बालिका मूत्रमार्ग – 1 अंगुल

औषधमात्रा –

- मध्यम मात्रा – 1 प्रकृच
बालिका = 1 शुक्ती

उत्तर बस्ती विधि –

स्थिती – उत्तान शयन
सम्यक संकोच्य सकथी

विधि = 1 अहोरात्रे में 3 या 4 बस्ती

इमप्रकार – 3 रात्री

स्नेहमात्रा – वर्धमान

3 रात्री विश्राम व पुनः 3 रात्री बस्तीदान

शोधन उपक्रम – में अंतर (ऋग)

- 1) वमन पश्चात् विरेचन = 15 वे दिन
- 2) विरेचन पश्चात् निरुह = 15 वे दिन
- 3) निरुह पश्चात् अनुवासन – सद्य
- 4) विरेचन पश्चात् अनुवासन = 7 दिवस पश्चात्

बस्ती – अर्धी चिकित्सा

:

अध्याय – 20 नस्य विधि

उर्ध्वं जन्मु विकारेषु विशेषात् नस्य इष्यते।
नासा हि शिरसो द्वारं तेन तद् व्याप्य हन्ति नान् ॥

नस्य प्रकार – 3 विरेचन शमन बृहण

1) विरेचन नस्य

शिरःशूल	स्यन्द	कुष्ठ	शोफ
शिरजाङ्घा	गलामय	अपस्मार	ग्रन्थि
पीनस	गलगण्ड	कृमी	

2) बृहण नस्य

वातज शूल	स्वरक्ष्य	वाक्संग	अवबाहुक
सूर्यावर्त	नासा	आस्य शोष	कृच्छृवबोध

3) शमन नस्य निलिका

व्यंग	केश दोष
	अक्षिरिजी

स्नेहमात्रानुसार नस्य भेद – 2

- 1) मर्श
- 2) प्रतिमर्श

अवपीड नस्य – कल्कादी द्वारा दिया जाता है

चूर्ण स्वरूप मे – धमापन नस्य

नस्य मात्रा = बिंदू – प्रदेशिनी अंगुली के 2 पर्व जल मे डुबोकर निचे गिरने वाली मात्रा

नस्य अयोग्य –

तोय मदय गर स्नेह पीत वा पीने की इच्छा रखनेवाले

भुक्त भक्त, शिरः स्नात, स्नातुकाम, स्त्रुत असृज

नव पीनस, वैगार्त श्वास कास

सूतिका

शोधित, दत्त बस्ती, अनार्तव, दुर्दिन्

ऋतुनुसार नस्य काल –

1) शरद वसंत – पूर्वान्ह

2) शीत काल (हेमंत शिशिर) – मध्यान्ह

3) ग्रीष्म – सायंकाल (चरक – प्रातःकाल)

4) वर्षा – स आतपे

नस्य विधी –

पूर्वकर्म – उत्तमांग स्वेदन

प्रधान कर्म – किंचित उन्नत पाद व किंचित निम्न मूर्धा

पश्चात कर्म – पादतल स्कंथ हस्तादि मर्दन

100 मात्रा पर्यन्त उत्तान शयन

कंठ शुध्यर्थ धूमपान, उष्ण जल से कवल

	मर्श नस्य	प्रतिमर्श नस्य
योग्य व्यक्ती		क्षत क्षाम बाल वृक्ष सुखात्मसु प्रयोज्यो अकालवर्षेषि
गुणधर्म	आशुकृत	चीरकरीत्व
	गुण उत्कृष्टता	गुण अपकृष्टता
मात्रा	उत्तम – 10 बिंदु मध्यम – 8 बिंदु हीन – 6 बिंदु	2 बिंदु

प्रतिमर्श नस्य वैशिष्ट्य –

आजन्म मरणं शास्तं प्रतिमर्शस्तु बस्तिवत् ।

मर्शवच्च गुणान् कुर्यात् स हि नित्योपसेवनात् ॥

न च अत्र यन्त्रणा नापि व्यापद् भयो मर्शवद्यम् ।

1) प्रतिमर्श नस्य बस्ती समान आजन्म हितकर

2) नित्य सेवन से मर्श समान गुणदायी

3) यन्त्रणा आवश्यक नहीं व व्यापद भय नहीं

नस्यार्थ तैल श्रेष्ठता –

तैलमेव नस्यार्थं नित्याभ्यासेन शस्यते ।
शिरसः इलेष्मधामत्वात् स्नेहः स्वस्थस्य नेतरे ॥

मर्श व प्रतिमर्श तुलना –

- 1) अच्छ स्नेह व विचारना स्नेह
- 2) कुटिप्रावेशिक व वातातपिक रसायन
- 3) अनुवासन व मात्रा बस्ती

पंचकर्म वयोमर्यादा –

- 1) नस्य – 7 – 80
- 2) धूमपान – 18 से कम निषेध
- 3) कवल – 5 से कम निषेध
- 4) शोधन (वमन रेचन) – 10 से 70

अणुतैल निर्माण –

जीवन्ती जलद देवदारु आदी द्रव्य – समभाग
दिव्य जल – 100 भाग
तैल सिध्दी – ऐकुण 10 पाक
10 वा पाक – अजादुरग्धसह



अध्याय – 21. धूमपानं विधी अध्याय

धूमपान – वातकफज विकारों के लिए

प्रकार – 3

- 1) स्निग्ध – वात दोषार्थ
- 2) मध्यम – वातकफ दोषार्थ
- 3) तीक्ष्ण – कफ दोषार्थ

TIERRA

अकाल अतिधूमपान उपद्रव –

रक्तपित्त आन्ध्य बाधीर्य तृष्णा मूर्च्छा मद मोहकृत

धूमनेत्र स्वरूप –

मूल स्थाने – अंगुष्ठसम
अग्र स्थाने – कोलास्थी प्रवेश सम

धूमनेत्र लंबाङ् –

- 1) तीक्ष्ण धूमपानार्थ – 24
- 2) स्निग्ध धूमपानार्थ – 32
- 3) मध्यम धूमपानार्थ – 40

धूमसेवन – मुखाद्वारा

धूम उद्धमन – मुखाद्वारा

नासाद्वारे उद्घमन करने से – दृक् विघातकृत

धूमपान –

धूम आक्षेप व विमोक्ष 3 बार करने से – 1 आपान होता है

इस तरह 3 आपान करना चाहिए

मध्यम धूमपानार्थ – कुष्ठ व तगर वर्जीत ऐलादी गण सर्वश्रेष्ठ

धूमवर्ती लंबाड़ – 12 अंगुल

स्थूलता – अंगुष्ठसम

अध्याय – 22 गंडूषादीविधी अध्याय

गंडूष – 4

- 1) स्नेहन
- 2) शमन
- 3) शोधन
- 4) रोपण



गंडूषार्थ द्रव्य	व्याधी / अवस्था
सुखोष्ण/ शीत तीलकल्कोदक	दन्तहर्ष दंतचाल वातिक मुखरोग
तैल / पांसरस	नित्य धारणार्थ
सर्पि / पय	ओषदाह पाक आगन्तुज क्षत, विष, क्षादग्ध
मधु	मुख वैश्वदय जननार्थ, मुख व्रण संधान, दाहतृष्णा प्रशमन
धान्याम्ल	आस्यवैरस्य, मलदौर्गच्छ नाशन
लवण रहीत धान्याम्ल	मुखशोषहर
क्षाराम्बु	श्लेष्मचय भेदन
सुखोष्ण उदक	वक्र लाघवार्थ

गंडूष धारण मर्यादा –

- 1) कफपूर्ण आस्यता
- 2) यावत् स्त्रवद् घ्राण अक्षि अथवा
 - कवल – संचारी
 - गंडूष – असंचारी

प्रतिसारण प्रकार – 3

- 1) कल्क
- 2) रसक्रिया
- 3) चूर्ण

मुखलेप प्रकार – 3

- 1) दोषधन

- 2) विषधन
3) वण्य

मुखलेप स्थूलता –

- 1) दोषधन – 1/4 अंगुल
2) विषधन – 1/3 अंगुल
3) वण्य – 1/2 अंगुल
मुखलेप निर्हरण पश्चात – अभ्यंग

मूर्धि तैल – 4

1) अभ्यंग	रौक्ष्य कंडू मलादीषु
2) परिषेक	अरुंषिका, शिरस्तोद, दाह पाक वर्ण
3) पिचू	केश शात, केशस्फुटन, केशधूपन, नेत्रसंभ
4) शिरोबस्ती	प्रसुति, अदित जागर नासा आस्यशोष, तिमिर, दारूण शिरोरोग

अभ्यंग – परिषेक – पिचू – शिरोबस्ती = उत्तरोत्तर बहुगुण (बलवान)

शिरोबस्ती –

- शिरोबस्ती यंत्र उत्सोध – 12 अंगुल
तैल मात्रा – केश भूमि के ऊपर – 1 अंगुल
धारण मर्यादा – वक्त्र व नासिका उत्क्लेद होनेतक
शिरोबस्ती धारण काल –

- 1) वाताज रोग – 10000 मात्रा
2) पित्तज रोग – 8000 मात्रा
3) कफज रोग – 6000 मात्रा
4) स्वस्थ व्यक्ति – 1000 मात्रा

शिरोबस्ती धारन – 7 दिनपर्यन्त

निमेष उन्मेष काल –

यावत्पर्येति हस्ताग्रं दक्षिणं जानुमंडलम् ।
निमेषोन्मेष कालेन समं मात्रा तु सा स्मृता ॥

अध्याय – 23 आश्वोत्तन अंजनविधि अध्यायं

सर्वेषां अक्षिरोगाणां आदौ आश्वोत्तनं हितम् ।
रुक्तोदकण्डूघर्षाश्रुदाहरागनिर्बहृणम् ॥
सर्व अक्षिरोगो मे आदय उपऋम – आश्वोत्तन
कार्य – रुक तोद कण्डू घर्ष अश्रु दाह राग नाशन

आश्वोत्तन विधि –

कनिनिका स्थाने 10–12 बिंदु द्वयंगुल अंतर से अवसेचन कराये ।

अंजन योजना –

अथ अंजन शुद्ध ततोः नेत्रमात्र अश्रये मले ।

- 1) शरीर शोधन पश्चात् योजना
- 2) केवल नेत्र आश्रीत् दोष होनेपर योजना
- 3) पक्व दोष होनेपर योजना

अंजन प्रकार – 3

- 1) लेखन अंजन – कषाय अम्ल कटु लवन रस युक्त द्रव्यों से
- 2) रोपण अंजन – तिक्त द्रव्य
- 3) प्रसादन अंजन – स्वादु शीत् द्रव्य

अंजन शलाका –

- 8 अंगुल लंबाइ
- अग्रभाग – मुकुल आनन सम
- 1) लेखनार्थ – ताम्र शलाका
- 2) रोपणार्थ – काल लौह शलाका
- 3) प्रसादनार्थ – सुवर्ण / रौप्य

कल्पना नुसार अंजन प्रकार --

- 1) पिण्ड – गुरु = हरेणु मात्रा
- 2) रसक्रिया – मःयम – वैल्लमात्रा
- 3) चूर्ण – लघु – द्विगुण्
तीक्ष्णांजन प्रयोग – दिन में निषेध रात्रि में करें।
तीक्ष्णांजन से अभिसप्त नेत्र – चूर्ण का प्रत्यंजन

TIERRA

अध्याय – 24 तर्पण पूटपाक विधी अध्याय

तर्पणार्थ पाली द्रव्य – यव माष

पाली उंचाइ – 2 अंगुल

तर्पण पश्चात् कर्म – धूमपान

दोषानुसार तर्पण –

- 1) वात – प्रतिदिन
 - 2) पित्तरोग – ऐक दिन अंतराल से
 - 3) कफरोग – दो दिन अंतराल से
- तर्पण पश्चात् दृष्टि को ग्लानी व साद होता है अतः
तर्पणान्तरं दृग्बलाधानार्थ पुटपाकं प्रयुंजीत

पुटपाक –

दोषानुसार पुटपाक –

- 1) स्नेहन – वातदोष

- 2) लेखन – कफयुक वात
- 3) प्रसादन – स्वस्थावस्था , दृक दौर्बल्य, वात पित्त रक्तज नेत्रविकार

पुटपाक निर्माण –

मांस + भेषज कल्क



उरुबुक वट अम्भोज पत्रादी लेपन



उसपर मृतिका लेपन



अग्निमे पक्व करना



लेप निर्हन कर रस निष्कासीत कर तर्पण योजना

धारण मात्रा –

- 1) लेखन – 100 मात्रा
- 2) स्नेहन – 200 मात्रा
- 3) प्रसादन – 300 मात्रा

कोष्ठ
कोष्ठण
शीत

पश्चात कर्म –

- 1) स्नेहन – धूमपान
 - 2) लेखन – धूमपान
 - 3) प्रसादन – धूमपान निषेध
- नस्य अनहै व्यक्ति में पुटपाक व तर्पण निषेध
तर्पण व पुटपाक समयो नेत्र पर मलिलका पुष्प बंधन करने का निर्देश
तर्पण व पुटपाक जितने दिन क्राया जाता है उसके दुगुने दिन पथ्य पालन

TIERRA

अध्याय -25 यन्त्रविधि अध्याय –

मुचुंडी यंत्र – गंभीर व्रण का मांस निर्हरण

शोष अर्म निर्हरण

अर्शोयन्त्र –

स्वरूप – गौस्तनाकार

लंबाइ – 4 अंगुल

परिणाह – पुरुष – 5 अंगुल प्रमदा – 6 अंगुल

शमीयन्त्र – अर्श पीडनार्थ

अंगुली त्राणक – वक्त्र विवृतीकरणार्थ

योनीव्रणोक्षण – 16 अंगुल

श्रुंग यंत्र – 16 अंगुल अग्रभाग – सिद्धार्थक छिद्र सम

अलाबु यंत्र – 12 अंगुल
 घटीयंत्र – गुल्म उन्नमन व विलयनार्थ
 शंकु – 6 संख्या
 बडिशाकृती शंकु – आहरणार्थ
 गर्भशंकु – लांबी – 8 अंगुल मूढगर्भ आहरणार्थ
 सर्पफणावक्त्र शलाका – अश्मरी निर्हरणार्थ
 शरपुंखमुख – दत्तपातनार्थ
 कार्पाकृतोष्णीश – संख्या – 6 प्रमार्जनार्थ
 जांबओष्ठ शलाका – क्षार व अग्निकर्मार्थ
 कोलास्थी दल मात्रमुख – नासार्श व नासाबुद हरणार्थ
 यंत्र में प्रधान – कंकमुख यंत्र प्रधानतम – हस्त यंत्र

अध्याय -26 शस्त्रविधी अध्याय

शस्त्र संख्या – 26

त्रीहीमुख शस्त्र – उदर भेदनार्थ
 कुठारिका – अस्थी उपरी सिरा वेधनार्थ
 ताम्र शलाका – लिंगनाश वेधनार्थ
 करपत्र –

लंबाइ – 10 अंगुल

स्वरूप – खरधार

उपयोग – अस्थीछेदनार्थ

दंतलैखनक – दन्त शर्करा निर्हरण

भूची – त्रिविधि

1) न्यस्त्र – 3 अंगुल = मांसल स्थाने सिवनार्थ

2) वृत्त न् – 2 अंगुल = अल्प मांसल स्थाने संधिस्थ व्रण सीवनार्थ

3) धनुर्वक्र – सार्ध (2.5 अंगुल) पक्व आमाशय व मर्म स्थानी सीवनार्थ

कूर्च – निलिका व्यंग कैश शातन, कुटटनार्थ

आरा शस्त्र – शोफ भेदनार्थ

पक्व / आम् शोफ अवस्था निर्धानरार्थ

शस्त्रदोष – 8

कुंठ खंड तनु स्थूल हस्त दीर्घ खरधार वक्र

शस्त्रकोष वर्णन – संग्रह + हुदय दोनों नि किया है

जलौका –

सुखिनां रक्तस्त्रावाय योजयेत् ।

सविष जलौका लक्षण –

दुष्टाम्बु मत्स्य भेकादी शव कोथ मलोद्धवा
रक्ता: श्वेता भृशं कृष्णाः चपला स्थूल पिच्छिला
इन्द्रायुधा विचित्र उर्ध्वराजयोः रोमशाश्व

निर्विष जलौका लक्षण –

शुधाम्बुजा
शैवलश्यावा वृत्ता नीलोर्ध्वराजयः
कषायपृष्ठा तन्वंगी किंचित पीर्तोदराश्व

जलौका असम्यक वमन से – रक्तमत्ता व्याधी – जले सीदती

जलौका दंश स्थान से विमोक्षण काल / जलौका शुद्ध रक्त आचुषण कर रही है ऐसा अनुमान –
दंशस्थाने तोद व कंडू

जलौका पुनः प्रयोग – 7 दिन उपरांत

जलौका दंश उपक्रम –

शत्थौत पिचु आस्थापन

शीत लेप

दोषानुसार रक्तनिर्हरण –

- 1) पित्त दुष्ट रक्तनिर्हरणार्थ – अलाबु व घटी निषेध
- 2) कफदुष्ट निर्हरणार्थ – श्रृंगद्वारा निषेध
- 3) वातपित्त दुष्ट निर्हरणार्थ – श्रृंग उपयोग
- 4) कफ वात दुष्ट निर्हरणार्थ – अलाबु व घटी उपयोग

स्थान व अवस्थानुसार रक्तमोक्षण –

- 1) एकदेशस्थ रक्तदुष्टी – प्रच्छान
- 2) पिंडित रक्तदुष्टी - प्रच्छान
- 3) त्वकस्थित रक्तदुष्टी – अलाबु घटी श्रृंग
- 4) ग्रथीत रक्तदुष्टी , अवगाढ रक्तदुष्टी – जलौका
- 5) सर्वागव्यापी रक्तदुष्टी – सिरावेध

अध्याय –27 सिराव्यथविधि अध्याय

रक्तगुण – मधुर लवण

किंचित शीतोष्ण

असंहत

रक्तज विकार निदान –

शीतोष्णस्तिर्थरक्षादैः उपक्रान्ताश्व ये गदाः ।

सम्यक साध्या न सिधन्ति रक्तजास्तांन् विभावयेत् ॥

रक्तमोक्षण मर्यादा – 16 – 70

स्थानानुसार सिरावेद –

1) मांसल स्थाने – व्रिहिमुख शस्त्राद्वारा व्रिहीमात्र वेद

2) अस्थी उपरी सिरा – कुठारिका शस्त्राद्वारे अर्धयव मात्रा में

रक्तमोक्षण पर प्रमाण – 1 प्रस्थ = 13 1/2 पल = 54 तोला

रक्तमोक्षण पश्चात कर्म – कोष्ठ तैल+लवण प्रतिसारण

रक्तमोक्षणभ में शुरू में दुष्ट रक्त ही निर्गमण

अग्रे स्त्रवति दुष्टास्त्रं कुसुमभादिव पितिका ।

रक्तमोक्षण = शेष रक्त रखकर निर्हरण

शेष रक्तार्थ – श्रृंग आदी से निर्हरण वा रक्तप्रसादन चिकित्सा

अध्याय – 28 शल्याहरण विधि अध्याय

शल्यगती – 5

1) वक्र 2) ऋजु 3) तिर्यक 4) उध्व 5) अधः

त्वक प्रनष्ट शल्य जानने के उपाय –

1) तत स्थाने अध्यंग स्वेदन मर्दन करने से – रग दाह संरंभ उत्पत्ती
– घृत विलयन

2) तत स्थाने लैप लगाने से वह शुष्क हो जाता है

स्नायु सिरा स्त्रोतस धमनीगत शल्य नष्ट हो गया है तो – अशमयुक्त खण्डचक्र रथ में बिठाकर अंग क्षोभ होने तक रथ चालन

सामान्येन सशल्यं तु क्षोभिण्या क्रिया सरूक् ।

सामान्यतः शल्य होनेपर क्षोभ करने से रुजा उत्पन्न होती है

अदृश्यशल्यसंस्थान – द्रवण आकृती समान

TIERRA

व्रणाकृती – 4

- 1) वृत्त
- 2) पृथु
- 3) चतुष्कोण
- 4) त्रिपुटक

शल्य निर्हरण उपाय – 2

- 1) अनुलोम
- 2) प्रतिलोम

स्थानानुसार शल्य निर्हरणार्थ यंत्र –

- 1) त्वक आदीस्थ शल्य – संदंश यंत्र
- 2) सुषीर शल्य – तालयंत्र
- 3) सुषीर स्थानस्थ शल्य – नाडीयंत्र

हुदय स्थानज शल्य – हिमाम्बु से त्रासन चिकित्सा कर
शल्य उस स्थान से स्थानांतरीत कर निर्हरण
4) कर्णयुक्त शल्य – नाडीमुख यंत्राद्वारे निर्हरण
5) निष्कर्ण शल्य – अयस्कान्ताद्वारे
6) पक्वाशयगत शल्य – विरेचनाद्वारा
7) दुष्ट वात विष स्तन्य रक्त तोय आदी – चूषणाद्वारा
8) कंठस्त्रोतोगत शल्य – सूत्र / विससूत्राद्वारा
9) अजातुष्शल्य – जटुदिग्ध शलाकाद्वारा
10) जानुष शल्य – अग्नतप्त शलाकाद्वारा
11) अधिस्थानज सूक्ष्म शल्य व व्रणस्थानज शल्य – क्षोम बाल व जल से
जातुष हेम रौप्य आदी धातुज शल्य शरीर में चीरकाल तक रहने से देहोष्माद्वारा शरीर में
विलीन हो जाते हैं
वेणु दारु श्रृंग अस्थी दंत बाल उपल इ शल्य शरीर में चीरकाल तक रहने पर भी
विलीन नहीं होते हैं

अध्याय – 29 शस्त्रकर्मविधी अध्याय

व्रणशोफ में दोष कार्यकारीत्व –

- 1) वात – शूल •
- 2) पित्त – दाह •
- 3) कफ – शोफ
- 4) रक्त – रुग्न

आमशोफ छेदन करने से –

TIERRA

- 1) सिरस्नायु व्यापद
- 2) असृक अतिस्त्रुती
- 3) रुजो अतिवृद्धी
- 4) दारण
- 5) क्षतज विसर्प

शस्त्रकर्म पूर्व –

भोजन वा तीक्ष्ण मद्यपान

- अपवाद –
- 1) मूढगर्भ
 - 2) अश्मरी
 - 3) मुखरोग
 - 4) उदर

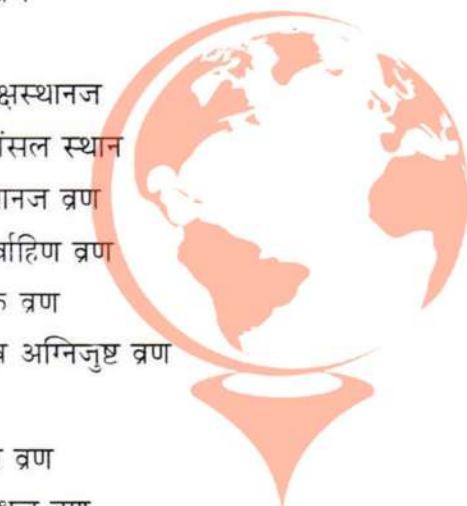
व्यम्लं तु पाटितं शोफं पाचनैः समुपाचरेत् ।

सदय सीवन योग्य व्रण –

- 1) विवृत
- 2) अभिघातज / सद्यो व्रण
- 3) लिखीत मेंदोज ग्रंथी
- 4) हस्त कर्णपाली
- 5) शिर अक्षिकूट नासा ओष्ठ गंड करण् ग्रीवा ललाट
- 6) उरु बाहु मुष्क स्फिक मैदृ पायु उदर
- 7) गंभीर एदेशस्थ
- 8) मासल स्थानस्थ
- 9) अचल व्रण

सीवन अयोग्य व्रण –

- 1) वंक्षण् कक्षस्थानज
- 2) अल्प मासल स्थान
- 3) चल स्थानज व्रण
- 4) वायु निर्वाहिण व्रण
- 5) इल्युक्त व्रण
- 6) क्षार विष अग्निजुष्ट व्रण



TIERRA

व्रणबंध निषेध –

- 1) व्याधी का व्रण
- 2) अग्निदग्धज व्रण
- 3) मधुमेह पिटिका
- 4) उन्दरु विष का कर्णिकायुक्त व्रण
- 5) क्षारदग्ध व विषयुक्त व्रण
- 6) मासपाक व दारूण गुदपाक
- 7) शीर्यमान रूजा दाहयुक्त शोफयुक्त व्रण

अध्याय 30 क्षार अग्निकर्म अधाय

क्षार निषेध –

- 1) प्रोदृत्त फलयोनी
- 2) गर्भिणी ऋतुमती
- 3) सर्व नैत्ररोग अपवाद – वर्त्मरोग

क्षार तीक्ष्ण करने के लिए प्रतिवाप = लांगली दंती चित्रक अतिविषा वचा स्वर्जिका हिंगु आदी

क्षार निर्माण पश्चात – 7 दिने के उपरांत उपयोग

क्षारगुण – 10

- 1) न अतितीक्ष्ण 2) न तिमृदू

- | | |
|---------------|-----------------|
| 2) श्लक्षण | 4) पिच्छिल |
| 5) शीघ्र | 6) सित |
| 7) शिखरी | 8) सुखनिर्वाप्य |
| 9) न विष्यंदी | 10) न अतिरूक |

क्षार सम्यक दग्ध लक्षण – पक्व जन्मु असित वर्ण

क्षार सम्यक दग्ध पश्चात कर्म – अम्ल द्रव्य द्वारा निर्वापण

क्षार से अग्नि श्रेष्ठ –

- 1) अग्नि से दग्ध व्याधी का पुनर्भव नहीं होता है
- 2) भेषज शस्त्र क्षार अग्नि से न सिध्द व्याधी अग्निकर्म से साध्य

स्थानानुसार दहन उपकरण –

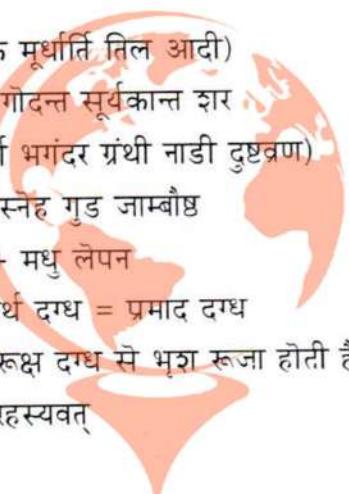
- 1) त्वक दाहार्थ – (मषक मूर्धार्ति तिल आदी)
वर्ति गोदन्त सूर्यकान्त शर
- 2) मांस दाहार्थ – (अर्श भगंदर ग्रंथी नाड़ी दुष्टव्रण)
मधु स्नेह गुड जाम्बौष्ठ

सम्यक अग्निदग्ध पश्चात कर्म – घृत + मधु लेपन

दुर्दग्ध, अत्यर्थ दग्ध = प्रमाद दग्ध

स्नेह दग्ध में रूक्ष दग्ध से भृश रूजा होती है

सूत्रस्थान – हुदयस्य रहस्यवत्



TIERRA